डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 1 जुलाई 2009 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - सातवां | अंक-तीसरा | जुलाई-2009 | मासिक पत्रिका

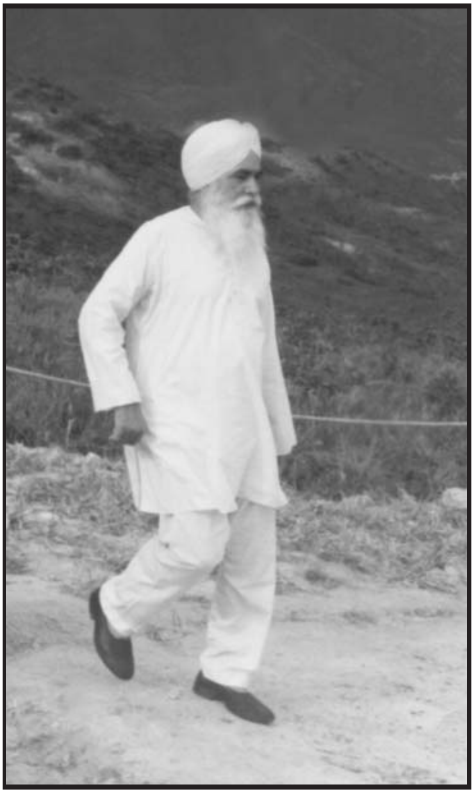

मेरे मनमोहन कृपाल 4
(एक शब्द)

सवाल-जवाब 5
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

बारह-माहा 17
(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

सेवा 37
एक अनमोल संदेश

प्रेम-विरह 46
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

धन्य अजायब 50
अहमदाबाद में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया । फोन - 9950 556671**

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया फोन - 9928 925304** उप सम्पादिका : **नंदिनी**

सहयोग : **रेणु सचदेवा, सुमन आनन्द, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह**

सन्त बानी आश्रम (88)
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

मेरे मनमोहन कृपाल तुझे याद करूं

(टेक) मेरे मनमोहन कृपाल तुझे याद करूं,
तेरी यादों में रो-रोकर इक फरियाद करूं,
मैं इक फरियाद करूं, (2)

1. क्यों दिया तूनें, मुझे तन करके बिछोड़ा, (2)
क्यों मुझे तूनें बीच दुनिया में छोड़ा, (2)
तेरे बिन मेरा, यहाँ कौन किसे बखान करूं;
तेरी यादों में.....

2. मैं तो नालायक, बेखबर दुनिया दिवानी से, (2)
मैं ना समझा किसी और के समझाने से, (2)
समझूं भी कैसे, आ समझा यही पुकार करूं,
तेरी यादों में.....

3. मैं ना जाना, जाना ना इस दिवाने को, (2)
दुनिया तो दौड़ी सिर्फ दुनिया के खजाने को, (2)
मैं तो बस रोया, कृपाल कृपाल करूं,
तेरी यादों में.....

4. ना समझ था, कई दिनों बाद ही समझा, (2)
नहीं देगा दर्श तन करके नाम में रमजा, (2)
याद करके तेरी यादें, रोज रोया करूं,
तेरी यादों में.....

5. बहुत मैं रोया, रोया तुझे याद करके, (2)
पर ना आया तू मेरे पास कभी तन करके, (2)
'अजायब' है तेरा, रहे तेरा यही अरदास करूं,
तेरी यादों में.....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

***एक प्रेमी** : माता मिली कैसी हैं और इस समय कहाँ हैं? क्या हम कभी उनसे मिल सकेंगे?*

बाबा जी : मैं परमात्मा कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिसने आप सबको अपना भेद बताया। आप हमें अंदर ले जाने के लिए और हमारी मदद के लिए हमेशा तैयार हैं। आप जानते हैं कि माता मिली ने अपने गुरुदेव की बहुत सेवा की; उसने मेरी और संगत की भी बहुत सेवा की है। अब वह गुरु कृपाल के चरणों में है, उनके चरणों का रस ले रही है। आप भी वहाँ जा सकते हैं आखिर! सबने वहाँ जाना है अगर आप ज्यादा समय भजन-सिमरन में लगाएं तो जीते जी ही देख सकते हैं कि माता मिली कहाँ हैं और हमारे लिए क्या सोच रही हैं?

प्यारेयो! सन्तमत करनी का मत है। कबीर साहब ने कहा है कि इधर से सब जाते हैं लेकिन उधर से कोई आकर हमें कुछ नहीं बताता। उधर से केवल सतगुरु आता है जो हमें समझाता है कि इस दुनिया का जो सामान एक बार हमारे हाथ से निकल जाता है वह फिर कभी हमें प्राप्त नहीं होता। हमारा जो साथी साथ छोड़ गया है वह उस शरीर में कभी हमारे पास नहीं आएगा। सतगुरु समझाते हैं, ''बाहर देह के साथ प्यार न करें, अंदर 'शब्द' के साथ जुड़ें।

***एक प्रेमी** : महाराज जी! आप हमें बताएं कि हम किस तरह सच्चखण्ड में एक-दूसरे की मदद कर सकते हैं?*

बाबा जी : देखो प्यारेयो! किसी की मदद करना बुरा नहीं लेकिन पहले अपने दिल में झाँककर देखें कि क्या हमने रुहानियत में इतनी तरक्की की है जो हम किसी की मदद कर सके?

सभी सन्तों ने बताया है कि सच्चखण्ड शान्ति का देश है। वहाँ मौत-पैदाईश नहीं किसी आत्मा को कोई रोग नहीं। वहाँ किसी को किसी की मदद की जरूरत नहीं। वहाँ पहुँची हुई आत्माएं परमात्मा से बात करती है, परमात्मा में मग्न हैं। उन्हें परमात्मा से अमृत मिलता है वे तृप्त होती है। सच्चखण्ड में केवल परमात्मा ही परमात्मा है।

प्यारेयो! डॉक्टर की जरूरत वहाँ होती हे जहाँ ज्यादा रोगी हों। जहाँ कोई रोगी ही न हो वहाँ डॉक्टर की क्या जरूरत है? हमने भक्ति करके रुहानियत के देश में किसी की मदद करने के लिए नहीं जाना। आत्मा परमात्मा रूप होकर ही वहाँ पहुँचती है। आत्मा 'शब्द' के अंदर जज्ब हो जाती है जैसे पानी का कतरा पानी में मिल जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

ज्यों जल में जल आए खटाना, त्यों ज्योति संग मिल जोत समाना।

मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ जिससे आपको यह बात समझने में मदद मिलेगी। एक बादशाह ने एक दिन अपनी प्रजा से कहा कि आज जिसे पैसा, कपड़ा और जरूरत का जो सामान चाहिए वह आकर ले सकता है। बादशाह ने सारा दिन खुले हाथों से खूब माल लुटाया। शाम के समय एक भंगी ने बादशाह से आकर कहा, ''मुझे तो अभी पता चला है कि आप बहुत माल बाँट रहे हैं, मुझे भी कुछ दें।''

बादशाह ने सोचा कि यह बहुत मेहनत करके आया है, बहुत नम्रता दिखा रहा है इसे कुछ देना चाहिए। बादशाह ने उसे एक सोने का थाल दे दिया जिसमें पाँच लाल और एक बहुत ही अमोलक हीरा जड़ा हुआ था। भंगी उस थाल को पाकर बहुत खुश हुआ। उसने घर जाकर वह थाल भंगन को दे दिया जिसे थाल की अहमियत का ज्ञान नहीं था। भंगन चार आने का टोकरा खरीदकर लाती थी जिसमें लोगों की मैल डालकर फैंकती थी और वह टोकरा दूसरे दिन ही टूट जाता था। वह इस थाल को पाकर खुश हुई कि यह बर्तन मजबूत है मैं इसमें लोगों की मैल डालकर बाहर फैंक आया करूँगी।

दूसरे दिन भंगन ने सोने के थाल में मैल डाला तो थाल काला हो गया, उसमें लगे लाल बुझ गए; हीरे का रंग फीका पड़ गया। आवाज़ आई कि तूने बहुत बुरा किया है पर उस आवाज़ को कौन सुनता है?

यह तो आपको समझाने के लिए एक कहानी है। सच्चाई यह है कि वह बादशाह कुलमालिक परमात्मा है। परमात्मा ने सन्तों को कमीशन दिया होता है। जब हम सब योनियों में घूम-घूमकर थक जाते हैं तो किसी योनि में ऐसा काम हो जाता है जैसा कि सन्त किसी पेड़ का फल खा लें! किसी जानवर पर सवारी कर ले! कोई कीड़ा उनसे टकरा कर मर जाए तो उसे इंसान का जामा मिलता है।

परमात्मा ने खुश होकर इंसान का जामा दे दिया। जिसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियां - लाल हैं और बुद्धि - चमकता हुआ हीरा है लेकिन इंसान ने इंसानी जामा जो सोने का थाल है उसकी कद्र नहीं की। इस जामें में बैठकर विषय भोगें और मीट शराब खाया तो पाँचों लाल बुझ गए और बुद्धि हीरा भी मैला हो गया। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

हीरे जैसा जन्म है कौडी बदले जाए।

हँस ने हीरे-मोती चुगने थे लेकिन गंद में चोंच फँसाकर बैठ गया है। इंसान ने 'नाम' जपकर इंसानी जामा सफल करना था; अमृत पीना था लेकिन यह विषय-विकार भोगने में लग गया और इस हीरे जैसे जन्म को बर्बाद करके चला जाता है।

एक प्रेमी *: आपने तो शादी नहीं करवाई आपके बच्चे भी नहीं हुए लेकिन आपने उस बच्चे(गोपी) को गर्भपात होने से बचाया। मेरा औरतों के साथ वास्ता पड़ता है जो गर्भपात कराने के लिए आती हैं। एक सतसंगी होने के नाते मैं यह जानना चाहता हूँ कि हमें किस हद तक गर्भपात बचाना चाहिए? मेरा दूसरा सवाल यह है कि आपने जिस बच्चे गोपी की कहानी सुनाई थी कि वह महाराज जी के कहे अनुसार ऊपर नाली में ही पेशाब किया करता था अगर मैं आपकी जगह होता तो यकीन नहीं करता। उससे कहता कि जब तक महाराज*

जी मुझे नहीं बताते मैं इस बात को नहीं मानता। अब मेरा सवाल यह है कि मैं किस तरीके से आप जैसा बन सकता हूँ?

बाबा जी : हाँ भाई! मैं जानता हूँ कि आप एक डॉक्टर हैं और भी डॉक्टर यहाँ बैठे हैं। आज का जमाना इस काम में बहुत तरक्की कर चुका है। कोई पाप को पाप और पुण्य को पुण्य नहीं समझता। लोग डॉक्टर के पास जाकर गर्भपात के लिए विनती करते हैं।

मैंने भी वैद्यक की है। मेरे ख्याल बचपन से ही धार्मिक रहे हैं। बेशक किसी ने किसी भी कीमत पर मुझे ऐसा करने के लिए कहा तो मैंने यही कहा कि मुझे लोगों को बचाने की तालीम मिली है मारने की नहीं। हम सतसंगियों को यही समझाया जाता है कि साँस-साँस का लेखा लिया जाएगा। अच्छे काम का ईनाम मिलेगा और बुरे काम की सजा भी मिलेगी; हमें इस कर्म से बचना चाहिए।

जिस डॉक्टर के पास गोपी का केस था उसे महाराज सावन सिंह जी से 'नाम' मिला हुआ था वह सिविल अस्पताल में सर्जन था। उसने महाराज सावन सिंह जी की शिक्षा पर अमल किया। उस डॉक्टर ने मुझे बुलाकर कहा, ''इसके माता-पिता सतसंगी है और मैं भी सतसंगी हूँ फिर ऐसा कर्म क्यों हो रहा है?'' मैं उस समय यही हमदर्दी दिखा सकता था कि लड़का हो या लड़की हो मैं उसे गोद ले लूँगा।

आपका जो दूसरा सवाल है कि जब तक महाराज जी मुझे खुद न कहते मैं नहीं मानता। यह अपने-अपने बर्तन का सवाल होता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''बड़ी उम्र के लोगों के ख्याल दुनिया में ज्यादा फैले होते हैं लेकिन बच्चों के ख्याल जल्दी एकाग्र हो जाते हैं।''

हमारे इलाके का एक मशहूर वाक्या है। एक आदमी ऊँटों का व्यापार करता था, वह बहुत गरीब था। महाराज कृपाल ने उसके छोटे बच्चे को दर्शन देकर कहा कि अमुक गाँव में छोटी सी दुकान बना लो इससे तुम्हारा फायदा होगा। तुम्हें यह काम करते हुए काफी साल हो गए हैं। बेटे ने बाप को बताया।

उस आदमी ने मुझसे बात की तो मैंने कहा, ''जो कुछ यह बच्चा कह रहा है तू कर ले, इसमें क्या हर्ज है?'' बच्चे भोली आत्माएं होती हैं। कई दफा इनका अंदर गुरु से मिलाप हो जाता है और यह बता देते हैं लेकिन विश्वास करना अपने-अपने बर्तन का सवाल होता है।

प्यारेया! जहाँ तक मेरे जैसा बनने का सवाल है, आप पढ़े-लिखे डॉक्टर है, काफी मालदार है लेकिन मैं एक गरीब आदमी हूँ। मेरी ज्यादा तालीम भी नहीं है। मैं तो अपने आपको संगत के चरणों की खाक समझता हूँ अगर आप मेरे जैसा बनना चाहते हैं जैसा मैंने अपनी जिंदगी में किया है वैसा आप भी कर लें। आपको भी रास्ता मिला हुआ है केवल आप ही नहीं सारे सेवक अपने जीवनकाल में सन्तों जैसे बन सकते हैं। सन्तों की सच्चे दिल से यही आशा होती है।

जिन्होंने मेरे साथ जिंदगी बिताई है वे अभी भी यहाँ है। उनमें से आज तक किसी ने मुझे सिनेमा में जाते हुए देखा हो या मैंने अच्छे खाने के स्वाद लगाए हो या किसी ने मुझे सुबह के समय सोया हुआ देखा हो तो वह मेरा कान पकड़ सकता है; मैंने अपने जीवन में अच्छे कपड़े भी नहीं पहने।

जिन चीज़ों का सन्तों की बानी में जिक्र आता है मैं हमेशा ही अपने गुरुओं की दया से उन डाकुओं से बचा रहा हूँ। इन चीजों से बचने के लिए बाबा बिशनदास जी ने मुझे भूखा-प्यासा रखा। मेरी जिंदगी बनाने के लिए मुझे डंडे भी लगाए लेकिन मैं उनके आगे नमस्कार ही करता रहा अगर आपके साथ कोई ऐसा व्यवहार करे तो आप वहाँ बिल्कुल नहीं बैठेंगे। मैं कहा करता हूँ, ''सेवा डालनी तो बड़ी आसान है अगर थप्पड़ खाने पड़े तो क्या आप खुश होंगे?''

बाबा बिशनदास जी ने कभी मेरी तारीफ नहीं की थी। मैं जब भी ज्यादा सेवा लेकर जाता आप मुझे थप्पड़ ही मारते। अब आप खुद ही अन्दाजा लगा सकते हैं कि घड़ा बनने के लिए कितनी कठिनाईयों से गुजरना पड़ता है। पहले जमीन खोदकर मिट्टी निकाली जाती है, मिट्टी

को छानकर पानी में गूँथा जाता है फिर चक पर चढ़ाया जाता है फिर उसे तार डालकर काटा जाता है फिर उसे आग का सेक भी सहना पड़ता है तब जाकर घड़ा बनता है।

मैं कहा करता हूँ सन्त बनने में अगर कई जन्म भी लग जाएं तो भी कम है। यह तो हमारे गुरुओं की दया है कि उन्होंने हमें पूरा 'नाम' दिया है और पूरा रास्ता बताया है अगर हम आलस छोड़े तो हम उनकी दया से कामयाब हो सकते हैं।

प्यारेयो! मुझे मेरे पिता के घर में हर चीज़ आसानी से मिल सकती थी लेकिन लगन लगन ही होती है प्यार प्यार ही होता है। इंसान जिस तरफ लग जाए उसे वही चीज़ अच्छी लगती है अगर हम पवित्रता रखें तो हमें पवित्रता की कद्र होगी अगर हम एकाग्रता रखें तो हमें एकाग्रता का ज्ञान होगा कि एकाग्रता से कितना रस प्राप्त होता है।

इसी तरह जो लोग पाँच डाकुओं से बचे हैं वे जानते हैं कि उन्हें कितनी शान्ति है। जब मन भटक जाता है तो हमें इन्द्रियों के भोगों में फँसा लेता है। जो इन भोगों में फँस जाते हैं उन्हें न दिन को चैन है न रात को चैन है। उन्हें सोते हुए वही स्वप्न आते हैं और जागते हुए भी वही ख्याल हैं। मुझे खुशी है कि सवाल करने वाले के दिल में कम से कम यह ख्याल तो आया कि मैं भी ऐसा बनूं!

एक प्रेमी *: मैंने एक जगह महाराज जी का लिखा हुआ पढ़ा है कि जब आपकी आत्मा को धर्मराज लेने आए और पूछें की आप किसके सेवक हैं? तो आप यह कहना कि दिल्ली वाले कृपाल सिंह जी के। मेरा सवाल यह है कि जिन्होंने आपसे 'नाम' लिया है तो क्या वे यह कहें कि हम 16 पी.एस. वाले अजायब सिंह जी के सेवक हैं?*

बाबा जी : हाँ भाई! यह अपना-अपना विश्वास है। मुझे मेरे गुरु ने जो बताया मैंने उस पर विश्वास किया, अब यह आपके विश्वास पर निर्भर है कि आपने क्या कहना है? आप भजन करें, धर्मराज का इंतजार ही न करें ताकि आपका गुरु ही आपके पास आए। प्यारेयो! काल भी

सतपुरुष का ही बनाया हुआ है। वह भी सतपुरुष का सहारा लेकर चलता है। जो आत्मा सतपुरुष का सहारा ले लेती है उसके पास काल नहीं, दयाल आता है; गुरु आता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हम भजन-सिमरन न करें तो भी गुरु आता है लेकिन इसमें हमारी कोई बहादुरी नहीं होती। यह सन्तों की अपने सेवकों के लिए खास दया होती है अगर आपसे और कुछ नहीं होता तो अपने गुरु को याद ही कर लें कि हम फलाने गुरु के शिष्य हैं।

एक प्रेमी : *कोलम्बिया के कुछ सतसंगी यह जानना चाहते हैं अगर हम किसी को पैसा या कोई और वस्तु दें तो क्या इससे कर्मों का बोझ होगा और उनसे वापिस लेने के लिए हमें फिर आना पड़ेगा इसलिए अब वे किसी की मदद करने से भी डरते हैं। महाराज कृपाल हमेशा ज़ोर देकर कहा करते थे कि हमें हमेशा दूसरों की निस्वार्थ सेवा करनी चाहिए, क्या आप इसे स्पष्ट करेंगे?*

बाबा जी : यह सवाल बहुत अच्छा है लेकिन मुझे अफसोस है कि इसके बारे में मैं सतसंग में बहुत कुछ बता चुका हूँ। हो सकता है उस समय आपके ऊपर नींद का हमला हो! हमें किसी की मदद करने से झिझकना नहीं चाहिए। किसी की मदद करना या निःस्वार्थ सेवा करना बहुत अच्छा है लेकिन आप उस मदद को उसी समय भूल जाएं अगर आप किसी सतसंगी या भाई-बहन को पैसे दें, दान दें या उसकी शारीरिक मदद करें तो फल की आशा न रखें अगर फल की आशा रखेंगे तो आपको इस संसार में फिर आना पड़ेगा।

सन्त अपने सेवकों को कभी भी अकृत्घन नहीं बनाते कि आप किसी की मदद न करें या दान न दें। आज जो दान की प्रथा चल रही है यह सन्तों की खुलदिली का ही सबूत है। सन्त हमेशा अपने सेवकों को एक-दूसरे की मदद के लिए प्रेरित करते हैं। सन्त सबकी मदद करते हैं वे जिया-दान भी देते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

हत्थों देके भला मनाईए।

अगर परमात्मा हमसे किसी की मदद करवाता है या हमसे दान करवाता है तो हमें परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमें मोह-माया में नहीं पड़ने दिया। उसकी दया से ही हम यह काम कर सकते हैं। वही इंसान दान कर सकता है जो पैसों को हाथों की मैल समझता हो और जिसका माया में मोह न हो। कबीर साहब कहते हैं:

कबीर माया सूम की देखन ही का लाड।
जे कौडी घट जाए ता साई तोड़े हाड।

कंजूस आदमी न खुद खाता है और न किसी को खाने ही देता है। वह न खुद दान करता है न दान करने देता है अगर नाव में पानी भर जाए! समझदार आदमी नाव में से पानी को जल्दी बाहर निकाल देता है इसी तरह अगर घर में ज्यादा पैसा आ जाए तो समझदार आदमी उस पैसे को अच्छी तरफ दान-पुण्य में लगा देता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जरूरतमंदो को ही दान देना चाहिए। जहाँ पैसे की कोई कमी नहीं सोने के कलश चढ़े हुए हैं धरती संगमरमर की है वहाँ दान नहीं देना चाहिए। आजकल जो सामाजिक झगड़े हो रहे हैं यह उन दान करने वालों का ही नतीजा है। उनकी मेहरबानी से एक समाज दूसरे के प्रति झगड़ा कर रहा है। वे वहाँ अच्छे-अच्छे मकान बना लेते हैं फिर कौन भगवान को याद करता है?'' मैं किसी की निन्दा नहीं कर रहा लेकिन जो कुछ हमारे गुरु ने कहा था आज हम खुद अपनी आँखों से देख रहे हैं।

मैं कई बार आपको महाराज सावन सिंह जी की बताई हुई यह कहानी सुनाया करता हूँ कि एक महात्मा था। वह आमतौर पर उसी घर से खाना खाता था जो परिवार अपने दस नाखूनों की कमाई करता था। एक दिन वह महात्मा एक गाँव से गुजर रहा था उसने वहाँ के लोगों से पूछा कि यहाँ पर कोई इस तरह का आदमी है जिसमें यह गुण हो जो अपने खून-पसीने की कमाई से गुजारा करता हो। उस गाँव

के लोगों ने बताया कि यहाँ एक महाजन है वह अपनी मेहनत की कमाई खाता है। उसका बड़ा अच्छा व्यापार है, वह झूठ नहीं बोलता। उसके पास बच्चा आए बूढ़ा आए सबको एक बराबर समझता है। उस महाजन के चार लड़के हैं और उसके पास चार लाख रूपया है।

महात्मा ने उस महाजन के घर जाकर कहा कि मैंने खाना खाना है। महाजन ने आदर किया महात्मा से कहा, ''महात्मा जी! बैठो अभी खाना तैयार करवा देते हैं।'' बातों-बातों में महात्मा ने महाजन से पूछा, ''तुम्हारे कितने लड़के हैं?'' महाजन ने कहा, ''एक लड़का है।'' फिर महात्मा ने पूछा, ''तुम्हारे पास कितना धन है?'' महाजन ने कहा, ''एक लाख रूपया है।''

महात्मा वहाँ से उठकर चल पड़े। महाजन ने कहा, ''आपके लिए खाना तैयार हो रहा है आप क्यों जा रहे हैं?'' महात्मा ने कहा, '' मैं तो तुझे सच्चा-सुच्चा आदमी समझकर तेरे घर आया था। मैंने सुना था कि तेरे चार लड़के हैं और तू बता रहा है कि एक लड़का है; क्या मैंने तेरे लड़के अपने साथ ले जाने है? मैंने सुना था कि तेरे पास चार लाख रुपया है और तू बता रहा है कि तेरे पास एक लाख रूपया है क्या मैंने तेरा धन ले जाना है?''

महाजन ने कहा, ''महात्मा जी! आप मेरी बात नहीं समझे। एक लड़का परमार्थ में मेरी मदद करता है जिसे मैं अपना समझता हूँ बाकी लड़के जुएबाज़, शराबी-कबाबी हैं, वे कर्ज लेने के लिए आए हैं; मैं कैसे कहूँ कि वे मेरे हैं? इसी तरह मैंने एक लाख रुपया परमार्थ में लगा दिया है जो मेरा है। बाकी के पैसों का पता नहीं डॉक्टरों की फीस या मुकदमों में लग जाना है या चोर, डाकुओं ने ले जाना है; मैं कैसे कहूँ कि वह मेरा है?''

महात्मा महाजन की बात को आसानी से समझ गया और चुप करके खाना खाने बैठ गया। प्यारेयो! सन्त-महात्मा हमें अकृतघन नहीं बनाते, किसी की मदद करने से नहीं हटाते। वे इतना जरूर कहते हैं

कि दान करते समय सोचो कि यहाँ दान की जरूरत है या नहीं? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

खेत पछाने बीजे दान।

मेरा एक दोस्त महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था। वह इसी इलाके का रहने वाला था। उसे व्यापार में काफी घाटा पड़ गया। कर्ज लेने वालों ने उस पर दावे कर दिए तो उसने सोचा अब आत्मघात करने में ही फायदा है। उस दिन मेरी जीप करणपुर की तरफ जा रही थी वह मेरी जीप के आगे लेट गया। मैंने जल्दी जीप रोककर उसे उठाया और उससे पूछा कि क्या बात है?

उसने बताया कि सिर पर इतने बाल भी नहीं जितना कर्ज हो गया है। व्यापार में घाटा पड़ गया है और इज्जत भी नहीं रही। मुकद्दमे बन गए हैं। मैंने उससे कहा, ''मुझे थोड़ा सा समय दे मैं अपना एक मुरब्बा जमीन बेच देता हूँ पाँच-छः लाख रुपया आ जाएगा तेरा कर्ज आसानी से उतर जाएगा।'' उसे कुछ तसल्ली हुई, उसे पता था कि मैं ऐसा कर सकता हूँ क्योंकि हमारा बहुत प्यार था। मैं करणपुर में महाराज कृपाल के पास गया। मैंने महाराज जी से इज़ाजत माँगी कि मुझे जल्दी जाना है। महाराज जी ने कहा, ''क्यों भाई! क्या काम है?'' सन्त तो दिलों की जानते हैं। मैंने उन्हें सारी हिस्ट्री बताई की यह बात है, मैंने मुरब्बे का सौदा करना है।

एक आदमी ने महाराज कृपाल को काफी सेवा दी थी। महाराज ने वह सेवा मुझे देकर कहा कि मुरब्बा बाद में बेचना, यह पैसे तू उस आदमी को दे दे; एक बार तुम्हारा मसला हल हो जाएगा। मैं फौरन जीप में बैठा लेकिन अफसोस! उस आदमी ने मेरी इंतज़ार नहीं की आत्मघात कर लिया। उसका लड़का मुझे पदमपुर में मिला।

जिस आदमी ने वह सेवा महाराज को दी थी उसके दिल में ख्याल आया होगा कि महाराज कृपाल को अपने लिए इन पैसों की जरूरत होगी इसलिए इन्होंने यह पैसे लिए होंगे लेकिन महाराज जी ने वह

पैसे एक सैकण्ड भी अपने पास नहीं रखे फौरन ही आगे किसी के भले के लिए दे दिए अगर मैं पहले वहाँ पहुँच जाता तो शायद उस आदमी की जान बच जाती। जिस आदमी की वह सेवा थी उसका कितना बड़ा पुण्य था। पता नहीं महाराज ने वह सेवा और किस जरूरतमंद को दी होगी!

आज से बीस साल पहले हजूर का एक नामलेवा इंस्पेक्टर था। जिसने प्रण किया हुआ था कि वह रिश्वत नहीं लेगा। आजकल नेताओं का राज्य है। जो आदमी रिश्वत न ले, उनसे महीना न बाँधे वह उसके बिस्तर में रस्सी डाले रखते हैं। उस बेचारे की भी यही समस्या थी। उस पर नाज़ायज मुकद्दमा बना। उसने सोचा कि ऐसे संसार में क्या रहना है जहाँ सच की कद्र ही नहीं, मैं आत्मघात कर लूँ।

वह मेरे पिछले गाँव मुझसे मिलने आया, मैं कहीं गया हुआ था उसने दो दिन मेरी इंतजार की। मैंने उससे कहा, ''मेरे पास पचास किल्ले जमीन है, घर है। मैं आसानी से तुझे सब कुछ दे सकता हूँ, मैं तेरे पाँव को हाथ लगाता हूँ तू अपनी अनमोल जान को न गँवा। विश्वास रख तेरी किस्मत तुझे जरूर मिलेगी। तुझे क्या पता है कि मालिक तुझे क्या दे दे?'' खैर इतने में उसका आत्मघात से ख्याल हट गया।

कुछ सालों बाद ही वह डी.एस.पी बन गया फिर वह जब मुझसे मिलने आया तब पाठी जी, लालाजी ने उसे नहीं पहचाना। तब उसने अपनी पहचान दी कि मैं वही आदमी हूँ जिसे सन्त जी अपनी जमीन, घर सब कुछ देने के लिए तैयार थे।

उससे पहले मेरे पास एक फौजी अफसर आया था, उसके साथ दो-चार आदमी और भी थे। उन लोगों ने कहा कि हमें खाने की जरूरत है। मैंने उन्हें खाना खिलाया। खाना खाकर वह मेरे मकान को देखकर कहने लगे कि आपका मकान काफी बड़ा है। आपकी शादी नहीं हुई आपका कोई बाल-बच्चा भी नहीं; आप यह मकान और जमीन किसे देंगे? मैंने उससे कहा, ''मैंने तेरी सेवा की है अगर तेरा इरादा है तो तू ले ले नहीं तो जिसकी किस्मत में होगा वह संभाल लेगा।''

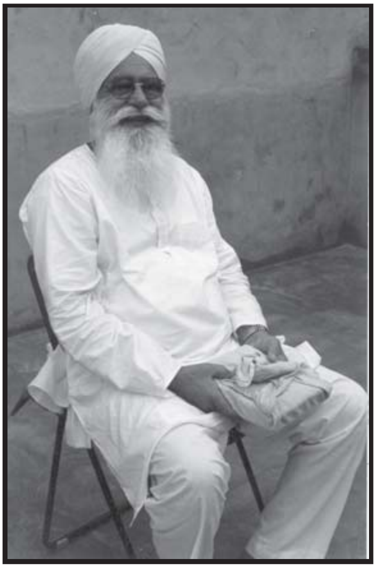

आप सोचकर देखें! जिन घरों या जमीनों को देखकर लोगों की आँखें पक जाती हैं सन्त भले काम के लिए उसे छोड़ने के लिए एक सैकण्ड भी नहीं लगाते अगर हम सभी ऐसा दिल बना लें तो हमारे अंदर ऐसे विचार ही नहीं आएंगे। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु नहीं भूखा तेरे धन का,
उन पर धन है शब्द नाम का,
पर तेरा उपकार करावे,
भूखे प्यासे को दिलवावे।

पिता को बच्चे की कमाई का पता होता है कि यह कितने खून-पसीने की है इसे कैसे संभालकर रखना है? इसलिए हमारे दान के हकदार हमारे सतगुरु ही होते हैं। वे जानते हैं कि सेवक का धन कहाँ पवित्र करना है। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बिन माला फेर दे गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है जाय पूछो वेद-पुराण।

हमारे ऊपर परमात्मा की मेहर है परमात्मा ने हमें धन-पदार्थ दिया है अगर किसी सतसंगी को जरूरत है और हम उसकी जरूरत पूरी कर सकते हैं तो यह कोई बुरा कर्म नहीं। निःस्वार्थ सेवा करें।

ऐसा न हो कि हमने किसी की मदद तो कर दी लेकिन उसे रोज़ यह कहते रहें कि देख! मैंने तेरी मदद की है, तू मेरा एहसानमंद नहीं है। मैं आगे से तेरी मदद नहीं करूंगा अगर आपने किसी की मदद की है तो उसे उसी समय भूल जाओ। आशा करते हैं कि प्रेमी किसी की मदद करते समय आगे-पीछे नहीं देखेंगे, न ही सोचेंगे।

P P P

13 अप्रैल 1997

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

बारह माहा

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपार दया करके हमें इस बानी की समझ दी कि बानी और वेद-शास्त्रों की क्या महानता है? हम सभी बानी पढ़ लेते हैं। हम सभी बानी को खत्म करने पर लगे हुए हैं कि यह जल्दी खत्म हो।

मैं कई बार सतसंगों में बताया करता हूँ कि हमने आर्मी में अखंड पाठ करवाया तब महाराज सावन को बुलाया। आप बहुत दयालु थे, आपका फौजियों से बहुत लगाव था क्योंकि आपने भी फौज में नौकरी की थी। आपने कहा, ''मुझे बहुत खुशी है कि आप लोगों ने आर्मी में रहते हुए अपनी मर्यादा कायम रखी है। आप सब परमात्मा को याद करते हैं।'' आपने फिर जोर देकर कहा, ''देखो बच्चो! इस बानी को पढ़ने-पढ़ाने का तभी फायदा है अगर हम इस पर अमल करें कि यह बानी क्या कहती है? अगर इस पर अमल नहीं किया तो पढ़ने-पढ़ाने वाले किसी का फायदा नहीं जो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं।''

मैं उन महान गुरुओं का धन्यवादी हूँ जिन्होंने हमें प्यार से इस तरह समझाया जिस तरह एक समझदार पिता अपने बच्चों को समझाता है। कई बार अफसोस भी होता है कि कई पिता अपनी ड्यूटी नहीं जानते। जब पिता को ही नहीं पता कि पिता के क्या फर्ज हैं तो उनके बच्चों को क्या पता होगा कि बेटा बनने के क्या फर्ज हैं? वे अपनी जिंदगी पशुओं की तरह बिताकर चले जाते हैं।

एक समय था जब संसार में वेद, शास्त्र, पहाड़, दरिया, चन्द्रमा, सूरज कुछ भी नहीं था, धंधुकारा छाया हुआ था। उस रहम के समुद्र में लहर उठी। उसकी मौज से अनेकों पहाड़, समुद्र, दरिया, दुनिया सब

कुछ ही हो गया। जमींदार जानता है कि उसने कब अपनी फसल को पानी देना है कब उसकी संभाल करनी है? इसी तरह परमात्मा ने ऋषियों-मुनियों को इस संसार में भेजा कि आप जाकर लोगों को उनकी मर्यादा बताएं कि इनके संसार में क्या रिश्ते हैं, क्या फर्ज हैं और किस तरह इस संसार में प्यार से रहना है?

आप पुरातन से पुरातन ग्रन्थ पढ़कर देखें! उनमें आपको हर रिश्ते के बारे में ज्ञान मिलेगा कि मियाँ-बीवी का क्या रिश्ता है? बाप-बेटे का क्या रिश्ता है? हमने संसार में कैसे रहना है? उन ग्रन्थों में यह भी लिखा है कि आप इस संसार में एक मेहमान की तरह आए हैं।

यह दुनिया एक नुमाईश की तरह है; परमात्मा एक पिता की तरह है। आप जब तक पिता की अंगुली पकड़े रखेंगे तब तक आपको इस नुमाईश में रस आएगा खुशी होगी। जिन्होंने बड़ी-बड़ी नुमाईशें देखी होती हैं उन्हें पता है कि दुनिया की नुमाईश में लोगों ने अपनी मशहूरी के लिए अच्छे तरीके से दुकानें सजाई होती हैं ताकि उनका सामान लोगों के ध्यान में आए और संसार में उसकी ज्यादा बिक्री हो।

एक बच्चा पिता की अंगुली पकड़कर नुमाईश में जाता है, वह नुमाईश देखकर खुश होता है। नुमाईश में हर देश का आदमी आया होता है वहाँ बहुत भीड़ होती है अगर गलती से बच्चे से पिता की अंगुली छूट जाती है तो वह रोना शुरू कर देता है। सामान उसी जगह रहता है लेकिन उसे उतनी देर ही खुशी रही जब तक उसने अपने पिता की अंगुली पकड़े रखी।

हमारी भी यही हालत है हम भी इस दुनिया की नुमाईश को देखने के लिए आए हैं। हमें अपने कर्मों के मुताबिक जिंदगी के जो चार दिन गृहस्थ में मिले हैं हम उन्हें परमात्मा की अंगुली पकड़कर ठीक से गुजार सकते हैं अगर हम दुनिया में मेहमान बनकर रहेंगे तो क्या बाप-बेटे का, भाई-भाई का झगड़ा होगा? यहाँ हम सब मेहमान हैं। मेहमान का काम एक-दूसरे के साथ प्यार करना है। एक-दूसरे की

कद्र करना है। परमात्मा की अंगुली छोड़कर हम अपने आपको भूल गए हैं। हम समझते हैं कि हम समझदार है। हमने नुमाईश में दिल लगाया है। बेटा! यहाँ आज तक न कोई रहा है न रह ही सकता है।

जब यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि इस दुनिया में सबसे विचित्र चीज क्या है? तब युधिष्ठिर ने कहा, ''दुनिया में सबसे विचित्र चीज यह है कि हम आँखो से अपने साथियों और बड़ों को मरते हुए देखते हैं फिर उन्हें अपने कंधो पर उठाकर श्मशान भूमि में छोड़कर आते हैं। हमारे ऊपर इसका असर नहीं होता हम कहते हैं शायद! मौत इनके लिए है हमारे लिए नहीं। कोई बाहर से आकर आपको श्मशान भूमि में छोड़कर नहीं आता आपके पुत्र या संबधी ही आपको श्मशान भूमि में छोड़कर आते हैं।'' आप लोग अभी यह शब्द पढ़ रहे थेः

करो मन गुरु चरणों से प्रीत।

पहले हमारी बुद्धि बहुत चेतन्य थी। ऋषियों-मुनियों ने ग्रन्थों में संस्कृत भाषा में इस बारे में सब कुछ लिखा है। कबीर साहब ने समयानुसार सरल भाषा में बड़े प्यार से संसार की मर्यादा को लिख दिया ताकि छोटी से छोटी बुद्धि वाला आदमी भी इसे समझ ले, जिसमें हमें बड़े प्यार से चेतावनी दी गई है।

प्यारे बच्चों! गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि **बारह-माहा** सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं समझने के लिए है। इसमें आप बताते हैं कि बुरी संगत आपकी जिंदगी को बर्बाद कर देगी, खुष्क कर देगी। एक बार आपके दिमाग को बुरी संगत की जहर चढ़ गई फिर इसकी कोई दवा नहीं। अच्छी संगत आपकी जिंदगी को बना देगी अगर एक बार आपको अच्छी जिंदगी की खुशबू चढ़ गई फिर चाहे सारी दुनिया एक तरफ हो जाए आप उसका रस नहीं छोड़ेंगे।

भागवत में एक मशहूर कहानी आती है कि एक तोती के दो बच्चे थे। एक बार तूफान आया दोनों बच्चे उस तूफान में उड़ गए। उनमें से एक बच्चा साधु के हाथ में आ गया। साधु ने उसे लावारिस जीव समझकर

उसका पालन-पोषण किया। दूसरा बच्चा चोर-ठग्गों के हाथ में आ गया उन्होंने भी लावारिस समझकर उस बच्चे की परवरिश की। वह बच्चा रोज चोरी, ठग्गी, मारधाड़ की बातें सुनता था उसके ऊपर उनका असर हुआ। साधुओं के दरबार में तो कथा ही होती है अच्छी बातें ही होती है। कबीर साहब कहते हैं:

कबीर साधु की कुतिया भली, साकत की बुरी माँ।
ओह सुने हरि नाम यश, ओह पाप वसाह न जाए।

साधु की कुतिया भी अच्छी है वह बोल नहीं सकती, कथा सुनती है। पापी माँ किसी की चुगली सुनाएगी या कोई बुरी बात बताएगी। बुरे का असर बुरा ही होता है।

इसी तरह एक आदमी के पीछे मारने वाले लग गए। वह भागकर एक बस्ती में गया। वहाँ दरवाजे पर एक तोता पिंजरे में बैठा था जो यह कहने लगा, ''यह बादशाह है इसके पास सोने का ताज है। इसे पकड़ो, मारो।'' उस आदमी ने सोचा! मेरा यहाँ आना ठीक नहीं यहाँ का पक्षी ही ऐसी बातें कर रहा है। जब वह आगे गया तो उसे जंगल में कुटिया मिली वहाँ एक तोता दरवाजे पर पिंजरे में टंगा हुआ था उसने कहा, ''आओ! जी आयां नूं, आपका स्वागत है।''

उस आदमी ने तोते से कहा कि मैं एक बादशाह हूँ। मेरे पीछे शेर लगा हुआ है। मैं अपनी जान बचाने के लिए इस बस्ती में आया हूँ। पीछे तुम्हारे जैसा ही एक तोता है जिसकी शक्ल, चोंच व रंग तुमसे मिलता है। जब मैं जान बचाने के लिए वहाँ पहुँचा तो उसने बोलना शुरू कर दिया कि यह बादशाह है इसके सिर पर ताज है। इसे पकड़ लो मार दो कत्ल कर दो। मैं वहाँ से डरता हुआ यहाँ आया हूँ और तू मेरा स्वागत कर रहा है। उस तोते ने कहा, ''हम एक ही तोती के बच्चे हैं, हमारा एक ही पिता हैं। यह संगत का फर्क है। तूफान आया वह चोरों के घर चला गया उस पर चोरों का असर हुआ। मैं साधुओं के पास आ गया मेरे ऊपर साधुओं का असर है।''

गुरु साहब हमें प्यार से चेतावनी देते हैं कि हे परमात्मा! हम तुझसे बिछड़ गए हैं। आत्मा सतपुरुष की बच्ची है, उसकी अंश है। हम तुझसे बिछड़कर चार कुंटो में घूमें। कभी पशु-पक्षी बनें! कभी गधे बनें! कभी इंसान बनें! अब हम थककर तेरी शरण में आ गए हैं। गुरु अर्जुनदेव जी अपने गुरु रामदास जी के आगे विनती करते हैंः

थक आए प्रभ तेरी छाँव।

जिस तरह बाग फल के बिना शोभा नहीं देता। हाथी सूंड के बिना शोभा नहीं देता। गाय दूध न दे तो उसे खाने के लिए कोई नहीं देता; उसकी पूजा नहीं होती लोग उसे सड़क पर छोड़ देते हैं।

धेन दुधा दे बाहरी किते न आवे काम।

शरीर पर चाहे जितना भी श्रृंगार कर लें किसी काम का नहीं। जब देह छूट जाती है तो सब इस शरीर को प्रेत समझते हैं कोई पास नहीं आता। आप चेतावनी देते हुए कहते हैं कि हम थककर तेरी शरण में आ गए हैं। आखिर भादों के महीने पर आकर फिर चेतावनी देते हैंः

भादों भ्रम भुलाणया।

ऐ भले लोगो! तुम भूल गए हो भ्रम में हो। तुमने परमात्मा को छोड़कर दुनिया से प्यार लगा लिया है। देह को चाहे जितना भी सँवार लें जब उड़ता हुआ पखेरू इसमें से निकल जाता है तो सभी इसे प्रेत कहते हैं। उस समय उसकी जान पर बनी होती है वह हाथ मरोड़ता है, गिरगिट की तरह रंग बदलता है लेकिन उस समय घर के लोग उसे शान्ति से शरीर भी नहीं छोड़ने देते। वे उससे पूछते हैं कि तेरे पास कहीं कुछ है तो बता जा? बार-बार कहते हैं कि कुछ तो बोल! अब सोचकर देखें! सारी जिंदगी बोलते ही रहते हैं।

छड्ड खलोते खिन्ना में जिन स्यों लग्गा हेत।

जिन बच्चों, भाई-बहनों और समाज की खातिर हम कुर्बानियाँ करते हैं, भूखे रहते हैं ठग्गियां-बेईमानियां करते हैं लेकिन जब यम

आता है वह बेटा-बेटी, भाई-बहन और समाज वालों को भेद नहीं देता कि मैं इसे कहाँ ले जा रहा हूँ; एक सैकिंण्ड में पखेरू उड़ जाता है।

मैं आपको कई राजाओं के बारे में बताया करता हूँ। जब पटियाला का राजा गुजरा उस समय सैंकड़ो आदमी महल के बाहर खड़े बोल रहे थे। किसी को पता नहीं चला कि मौत का फरिशता किस दीवार से फाँदकर आया और कहाँ ले गया? राज्य की चिन्ता हुई लेकिन राजा की किसी को फिक्र नहीं हुई। बाहर किसी को नहीं बताया फौरन उत्तराधिकारी को तिलक कर दिया। हम जिस सामान के लिए इतना कुछ करते हैं उस सामान को कौन पूछता है? कबीर साहब कहते हैं:

आसी पासी योद्धा खड़े सभी बजावें गाल।
मंज महल्लों लै गया ऐसा काल कराल।

वह बड़े-बड़े राजाओं तानाशाहों को नहीं छोड़ता तो हमारा क्या है? गुरु साहब कहते हैं, ''**बारह-माहा** का मतलब यही है कि मनुष्य जामा आ गया है आपको मौका मिला है आप जागें।'' आपने हर महीने को मनुष्य जन्म के साथ मिलाया है।

आज बैसाख का दिन है आज के दिन पूरे हिन्दुस्तान में लोग अलग-अलग तरीके से इकट्ठे होते हैं और अपने-अपने तरीके से परमात्मा की याद मनाते हैं। हमारे उत्तरी भारत में आज के दिन फसल की कटाई होती है। जमींदारों के घर नई फसल आती है उन्हें खुशी होती है वे इस तरीके से परमात्मा का धन्यवाद करते हैं।

हमारे सिक्ख समाज में इस दिन की खास महानता है। आज 299 साल हो गए हैं आज के दिन गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ने सिक्ख समाज की नींद रखी थी। सन्त कभी भी एक समाज या एक मुल्क के लिए नहीं आते। परमात्मा एक है उसकी अंश आत्मा राजकुमारी भी एक है। वह न हिन्दु है न मुसलमान है। परमात्मा ने हिन्दुओं पर न हिन्दु का लेबल लगाकर भेजा है न उसके वापिस जाने पर ही वह लेबल देखता है। परमात्मा ने तो हमारे अमल देखने है।

कलर पेज

जो सन्त परमगति को प्राप्त होते हैं उनकी नजर आत्मा पर होती है। जब हम उनसे 'नाम' लेकर सिमरन के जरिए अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाते हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों परदे उतार देते हैं पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं वहाँ तक औरत-मर्द का लिंग भेद है उससे आगे आत्मा ही आत्मा है।

ऐसे महात्मा से हर मुल्क हर जाति का आदमी बेधड़क फायदा उठा सकता है। वे जब भी आते हैं सबको एक जैसा उपदेश देते हैं। ऐसे महान गुरु जब तक संसार में रहते हैं सब जातियों के लोग बिना किसी भेदभाव के बैठकर भजन-सिमरन करते हैं। जब वे महात्मा चले जाते हैं तो बाद में हम लोग धीरे-धीरे अपने मतलब के लिए टीके बना लेते हैं। जो महात्मा सारी दुनिया के लिए आते हैं हम उन्हें छोटे-छोटे दायरो में बंद कर देते हैं। ऐसा करके हम उन महात्माओं के साथ और क्या बेइंसाफी करेंगे?

आज के दिन उत्तरी भारत में गुरु गोविंद सिंह जी ने सब जातियों के लोगों को निमंत्रण दिया था। हिन्दुस्तान में वह एक ऐसा समय था जिसे बयान करते हुए आत्मा काँपती है। उस समय गरीब जनता बुरी तरह लताड़ी जाती थी। आपने बड़े प्यार से हर जाति को 'नाम-शब्द' के साथ जोड़ा और कहाः

भय काहूं को देत नेह भय मानत आन।

देखो प्यारेयो! किसी को जाकर डराना भी पाप है अगर कोई आपके दरवाजे पर आकर आपको बेमतलब डराता है फिर चुप रहना भी पाप है। उस समय हमारी जनता विदेशियों के आगे भेड़ की तरह थी जैसे भेड़ को पकड़कर जहाँ मर्जी ले जाएं।

दक्षिण में शिवाजी मराठा और उत्तर में गुरु गोविंद सिंह जी उठे। इन दोनों ने मुगलों की जड़े ऐसी हिलाई जो फिर हिन्दुस्तान में नहीं लगी। गुरु गोविंद सिंह जी ने 'शब्द' का प्रचार किया। हम उत्तरी भारत के लोग उनकी याद में इकट्ठे होते हैं। हमें बहुत खुशी है कि हमारे

हिन्दुस्तान में बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, गुरु-पीर हुए हैं। हमारे पास उनकी लेखनियां हैं। सब लेखनियों में यही लिखा है कि बुरी संगत से बचें, अच्छी संगत में जाएं।

मनुष्य जन्म उत्तम है यह सदा नहीं रहेगा। एक दिन यह हीरा आपसे छिन जाएगा! बैठे-बैठे बीमारी आ जाएगी। समय पर बुढ़ापा आ जाएगा शरीर की शोभा खराब हो जाएगी, मौत आ जाएगी! एक दिन आपने यहाँ से चले जाना है। आपका काम 'नाम' की कमाई करना है। किसी सन्त-सतगुरु के बिना आपको 'नाम' का ज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि 'नाम' कोई लफ्ज नहीं है। जब तक आपको 'नाम' नहीं मिलता तब तक आप मालिक के दरबार में नहीं पहुँच सकते।

मैं बताया करता हूँ अगर आपको अमेरिका जाना है तो सबसे पहले आप पासपोर्ट बनावाएंगे फिर उस एंबेसी के कर्मचारियों के पास जाएंगे। वे आपके वीजे पर अपनी मोहर लगाकर देंगे तभी आप उनके मुल्क में दाखिल हो सकते हैं अगर वे आपको वीज़ा नहीं देते तो आप उनके मुल्क में नहीं जा सकते अगर जाएंगे तो वे पुलिस के हवाले कर देंगे। जिस परमात्मा ने इतनी बड़ी दुनिया बनाई है उसने ही ये कानून बनाए है। गुरु साहब कहते हैंः

सतगुरु विच आप रखयोन, सब सुणयों लोक सवाया।

हमने सतगुरु को बीच में नहीं रखा। हम लोग कह देते हैं कि मैं पंडितों के घर पैदा हुआ हूँ। मैं मुसलमानों के घर पैदा हुआ हूँ। मैं सिक्खों के घर पैदा हुआ हूँ मुझे सतगुरु की जरूरत नहीं। ये हमारे मन की बात है अगर चोर चोरी करते समय पुलिस को याद करे तो वह क्या कर सकता है? जब पकड़ा जाता है तो सब कुछ भूल जाता है। हमारी भी यही हालत है अब तो जो हमारे मुँह में आता है हम बोल देते हैं लेकिन जब पराए वस हो जाते हैं तो वे जो करें उनकी मौज है।

जब आपके बहुत सारे पुण्य इकट्ठे हो जाते हैं तो ईनाम के रूप में इंसान का जामा मिलता है। यह इंसानी जामा तभी सफल है अगर

आपने इसमें 'नाम' प्राप्त कर लिया, अपना जीवन साध-संगत में लगा दिया। विषय-विकार भोगना, शराबों-कबाबों में जिंदगी बर्बाद करना अपने आपसे अन्याय करना है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

अपने जीव की दया पा लो, चौरासी का फेर बचालो।

परमात्मा तभी परदा खोलेगा अगर आप परमात्मा वाले असूलों पर चलेंगे। परमात्मा हर किसी को मुफ्त शिक्षा देता है। ऐसा नहीं कि आप गुरु ग्रन्थ साहब को खोलकर लोगों से पैसे इकट्ठे कर लें।

गुरु पीर सदाए मंगण जाए ताके मूल न लग्गी पाए।
घाल खाए कुछ हत्थों दे नानक राह पछाणे से।

अगर आप यह सोचें कि **बारह-माहा** पढ़ने वाले के आगे दस रूपये का मत्था टेककर हम भवसागर से पार हो जाएंगे तो इससे

सस्ता सौदा और क्या हो सकता है? मैंने दर्शन से कहा, ''यह विजय की शादी नहीं जिसकी मर्जी हो तुझे मत्था टेक दे अगर कोई पैसे रखकर मत्था टेके तो तू ऐसा मत करने देना।'' इसने मुझसे फिर कहा मैं **बारह-माहा** कैसे पढ़ूंगा? मैंने इसे मुश्किल से मनाया कि तूने बारह-माहा मुँह से पढ़ना है। इसने बहुत जल्दबाजी में **बारह-माहा** पढ़ा कि मुझे कुछ दे तो नहीं रहे। प्यारे बच्चों! गौर से इस बानी को सुनें:

वैसाखि धीरनि किउ वाडीआ जिना प्रेम विछोहु।

अमेरिका की कहावत है कि किसी पेड़ का फल खाने से ही उसकी मिठास का पता लगता है। गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरु रामदास का फल खाया तो उन्हें पता लगा कि इसमें कितनी मिठास है।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''आपको मनुष्य जन्म बहुत उत्तम मिला है। चाहे आप करोड़ों रूपये खर्च करें! आप किसी से आँखें, टाँग या शरीर का कोई अंग माँगकर देखें! क्या वह दे देगा?''

परमात्मा ने हमें मुफ्त में बुद्धि दी है जिससे हम अच्छे-बुरे की पहचान कर सकते हैं फिर इंसान का जन्म दिया है जिसमें हम अपना अगला सुधार सकते हैं। पिछले जन्म में हमने मिर्चें बीजी हैं जो हमने खुद ही काटनी हैं। आगे तो अच्छी फसल बीजें ताकि अच्छी काट सकें। फरीद साहब कहते हैं:

लोड़े दाख बिजोरियां कीकर बीजे जट्ट।
हंडे ऊन कताएंदा ते पैंदा लोड़े पट्ट।

हम तारा-मीरा साग बीजकर खीर के स्वाद ढूंढते हैं? तारा-मीरा साग में खीर जैसा स्वाद तो नहीं आएगा। अब आगे के लिए तो अच्छी फसल बीजें। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि परमात्मा प्यार है। जो परमात्मा से बिछड़ चुके हैं उनकी जिंदगी कैसे गुजरती है? वे सोते-जागते परमात्मा को याद नहीं करते अगर आपका परमात्मा से गुरु से प्यार है तो चाहे आप उसे न भी याद करें तब भी आपकी आत्मा अंदर से उसे याद करेगी। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

टोटे में भक्ति करे ताँका नाम सपूत।
मायाधारी मशकरे केते ही गए ऊत।

हम अरदास नहीं करते परमात्मा के साथ मजाक करते हैं। खुद अरदास करेंगे घुटने रगड़ेंगे तो ही परमात्मा मानेगा। हम भाई, पंडित से कहते हैं कि तू ही अरदास कर।

कबीर साहब के समय में लोदी सिकन्दर बादशाह था, वह बहुत शक्तिशाली बादशाह था। आज उसे कोई याद नहीं करता लेकिन पाँच सौ साल बाद आज भी किसी सड़क का नाम कबीर सड़क और किसी चौक का नाम कबीर चौक रखा हुआ है। हम लोग जगह-जगह कबीर साहब का जन्मदिन मनाते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''जब पवन पेड़ के पत्ते को उड़ाकर ले जाती है फिर वह पत्ता वापिस आकर पेड़ के साथ नहीं लगता। एक बार देह हाथ से निकल जाए तो फिर दोबारा नहीं मिलती।''

जब गुरु नानकदेव जी हुए हैं उस समय बहुत शक्तिशाली मुगल राजा थे आज उन्हें कौन याद करता है? हम गुरु नानकदेव जी को बहुत प्यार से याद करते हैं क्योंकि उन्होंने प्यार का संदेश दिया हमारे दिलों पर राज्य किया। राजाओं ने हमारे तन पर राज्य किया। आपको अमोलक इंसानी जन्म मिला है जो बार-बार नहीं मिलेगा।

हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माया धोहु।

गुरु साहब कहते है कि मौत के समय माता-पिता, बहन-भाई कोई काम नहीं आता। जो उस समय मदद करे हाजिर हो जाए हम उस सज्जन पुरुख को भूल गए हैं। हम बेटे, बेटियों और समाज के लिए सारा दिन लगे हुए हैं लेकिन जिस परमात्मा के सामने जाकर फिर पेश होना है उसे भूले हुए हैं।

एक अंग्रेज ने मुझसे सवाल किया कि जब कर्मों का हिसाब होता है तो इस जीव को धर्मराज के सामने कितनी देर खड़े होना पड़ता है? मैंने हँसकर कहा, ''मैं इस सवाल पर कई घंटे बोल सकता हूँ पर आपको छोटा सा जवाब देता हूँ कि हिसाब-किताब तो पहले ही हो चुका होता है। जीव के वहाँ पहुँचते ही उसे कर्मों के मुताबिक धक्का दे दिया जाता है कि तेरी यह योनि है। वहाँ देर किस बात की है? धर्मराज की किसी के साथ दुश्मनी नहीं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कीता पाईए आपणा ते घाल बुरे क्यों घालिए।

जब हमारी करनी पर फैसला है तो हम सोचकर क्यों न करें?

कप्पड़ रूप सुहावना छड्ड दुनिया अंदर जावणा।
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा।
हुक्म किए मन भांवदे राह भीड़ा अग्गे जावणा।
नंगा दोजक चालया दिस्से खड़ा डरावणा।
कर औगुण पछोतावणा कर औगुण पछोतावणा।

यहाँ हम माया के पदार्थ इकट्ठे करते हैं। इन पदार्थों से हमारे बड़े-बुजुर्ग कितना प्यार करते थे क्या वे साथ ले गए? क्या हम इन्हें

साथ ले जाएंगे? कुरान के अंदर उस रास्ते को बाल के दसवें हिस्से जितना लिखा है। कबीर साहब और गुरु नानकदेव जी ने उस रास्ते को राई के दसवें हिस्से जितना लिखा है। उस नदी का जिक्र कुरान, गुरु ग्रन्थ साहब, कबीर साहब की बानी और गरूड़ पुराण के अंदर भी है कि वह बड़ा भयानक रास्ता है। यहाँ हम कितने सूट बनवाते हैं जब तन भी यहीं जला दिया जाता है तो क्या कपड़े साथ जाएंगे?

मैं बताया करता हूँ कि हमारी आर्मी में जो आदमी ऐब कर लेता था उसके हाथों में हथकड़ियां, पैरों में बेड़ियां होती थी। उसके चारों तरफ सिपाही बंदूक लेकर खड़े होते थे। उस समय साथ खड़ा बंदा सजा सुनाता था कि इसने यह जुल्म किया है इसे सेन्ट्रल जेल हो रही है। उसे किसी से मिलने नहीं दिया जाता था वहीं से जेल भेज दिया जाता था। सिर्फ इशारा ही करना होता था, वह दृश्य धर्मराज की तरह ही था।

प्यारे बच्चों! फैसला पहले ही हुआ होता है। मैंने आपको आँखों देखी मिसाल बताई है, यह बाहर की मिसाल है। जिनकी आँखें खुली हैं जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि अंदर जीवों की क्या हालत है? क्या होता है? हम यहाँ जो श्रद्धांजली सुनते हैं ये यहीं तक हैं अंदर जो उसके साथ होती है वही जानता है फिर पछताने से क्या बनता है?

पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओह।

प्यारे बच्चो! पुत्र, पौत्र और पड़पोत्र ने साथ नहीं जाना। गुरु परमात्मा 'शब्द' में मिलकर नाश से रहित हो गया है। हमारा उसके साथ प्यार नहीं हम उसे कभी याद नहीं करते। हमारा दुनिया के साथ मोह है जबकि दुनिया का कोई सामान साथ नहीं जाता।

पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''मैं किसका नाम लूं! कौन यहाँ से घाटा खाकर गया है यहाँ से सारी दुनिया ऐसे ही गई है। करोड़ो में से कोई एक आधा ही था जिसने परमात्मा की भक्ति करके अपने जीवन को जीते जी सफल बना लिया।''

कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।

हमारी यह हालत है कि हम न तीतर हैं न बटेर हैं। न हम दुनिया से कुछ ले सकते हैं और न मालिक से ही ले सकते हैं।

इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि।

प्यारे बच्चों! उस 'नाम' के बिना कोई लफ्ज दुनिया की रचना पैदा नहीं कर सकता। जिस 'नाम' ने दुनिया की रचना पैदा की है वह कण-कण में व्यापक है। दुनिया का कोई भी लफ्ज खंड-ब्रह्मांड नहीं चला सकता। गुरु साहब कहते हैं:

नामे ही ते सब कुछ होया।

आप आँखों से जिस संसार की रचना देखते हैं यह 'नाम' ने ही पैदा की है। पलटू साहब भी कहते हैं:

नाम नाम सब कहत है नाम न पाया कोए।
नाम न पाया कोए नाम की गति है न्यारी।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि परमात्मा ने दया मेहर करके हमें इंसान का जामा दिया, यह परमात्मा से मिलने का एक मौका है। जप-तप, पूजा-पाठ और बेटे-बेटियों के धंधे किसी ने भी तेरे काम नहीं आना। किसी साधु की संगत में जाएगा वह तुझे 'नाम' जपने के लिए कहेगा। जिसने 'नाम' जपा होगा वही तुझे 'नाम' जपने के लिए कहेगा। जिसने खुद 'नाम' नहीं जपा वह बेचारा तुझसे क्या कहेगा?

भई प्राप्त मानुख देहुरिया गोविंद मिलन की ऐह तेरी वरिया।
अवर काज तेरे किते न काम मिल साध संगत भज केवल नाम।

गुरु अर्जुनदेव जी को भी भाई, मुल्ला, पुजारी मिल सकते थे आप भी दस रूपये मत्था टेक सकते थे। आपको अपने गुरु के आगे इतनी लम्बी चौड़ी अरदासे करने की क्या जरूरत थी? परमात्मा रूप होकर भी आपने अपने गुरु रामदास जी के आगे गरीबी धारण की।

आप कहते हैं कि हे गुरु रामदास! मैं तेरी शरण में हूँ, तू शरण आए की लाज रख। लोग क्या कहेंगे कि इसका शिष्य नर्क में गया है! सन्त सदा यही कहते हैं कि हम किसी योग्य नहीं थे यह हमारे गुरु की दया है, सब कुछ हमारे गुरु ने ही किया है। गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरु रामदास जी के चरणों में तन-मन से बहुत सेवा की। तालाब बनने के समय आपने अपने सिर से टोकरी नहीं उतारी थी।

जप तप संयम धर्म न कमाया सेवा साध न जाणया हर राया।
कहो नानक हम नीच कर्मा शरण पड़े की राखो शरमा।

गुरु साहब कहते हैं कि 'नाम' जपे बिना हम इस दुनिया को खराब कर रहे हैं। **परमात्मा को भूलना दुखों को आवाज लगाना है। परमात्मा को भूलते ही सुख दूर हो जाते हैं, दुख डेरा लगा लेते हैं।**

दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोय।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं गुरु को भूलने, 'नाम' को भूलने से सुख-शान्ति कहाँ है? जहाँ जाओगे वहाँ दुख ही दुख और मुसीबतें ही मुसीबतें हैं। वह दया का पुंज है दया ही करता है।

आप कागसुंड की कथा पढ़कर देख लें! कागसुंड पिछले जन्म में अच्छा पढ़ा-लिखा था। जब उसके गुरु उसके पास गए उस समय वह मस्ती में था। उसने सोचा! मेरा गुरु ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं है और इसे अच्छी बात भी नहीं करनी आती। उसने अपने गुरु का आदर नहीं किया, गुरु को देखकर खड़ा नहीं हुआ।

गुरु दयावान होते हैं। गुरु ने तो कुछ नहीं कहा लेकिन परमात्मा करण-कारण है परमात्मा ने ही गुरु को बनाया है; परमात्मा को मंजूर नहीं हुआ। परमात्मा कागसुंड को चौरासी में भेजने लगा तब उसके गुरु ने परमात्मा के आगे विनती की कि मैं इसे सुधार लूंगा आप इसे चौरासी में न भेजें। परमात्मा ने कहा कि मैं कानून भंग नहीं कर सकता। मैं इसे कौए की एक योनि जरूर दूंगा। रामायण में आता है

उस समय कागसुंड के गुरु की चीख निकल गई कि मेरा सेवक होकर कौए की योनि में जाएगा!

हमें यह रिश्ता समझ नहीं आता क्योंकि हम 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं करते। जिस गुरु ने आपके ऊपर अहसान न किया हो आपसे पैसा पाई न ली हो फिर भी आप उसके कहे मुताबिक अपनी जिंदगी नहीं बनाते। गुरु तो यही कहता है, ''नाम जपो अपनी जिंदगी बनाओ समय की कद्र करो।''

77 आर.बी. का वाक्या है। मैं वहाँ शाम को आठ बजे से नौं बजे तक एक घंटे के लिए बाहर आता था। उस गाँव के कुछ परिवार मुझसे जुड़े हुए थे। वे जल्दी खाना बनाकर, खेती-बाड़ी का काम करके मेरे पास आ जाते थे। वे उस एक घंटे में चार वचन सुनते और 'नाम' जपते। दूसरे लोग पेड़ के नीचे बैठकर किसी की चुगलियां करते या शराब पीकर एक-दूसरे से झगड़ा करते। घर की औरतें बच्चों को पीटती।

जब ये प्रेमी लोग उधर से निकलते तो वे लोग कहते कि हमसे तो ये लोग अच्छे हैं ये सतसंग भी सुन आते हैं और काम भी हमसे ज्यादा करते हैं अब आराम से जल्दी सो भी जाएंगे! अगर 'नाम' जपेंगे, सतसंग करेंगे तो आपको ज्यादा उद्यम मिलेगा। आप जानते हैं कि हमें काम भी करना है और सतसंग के लिए भी समय निकालना है।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं, ''सन्त आकर हमसे दुनियादारी नहीं छुड़वाते। वे कहते हैं कि आप अच्छे तरीके से दुनियादारी चलाओ अगर आपकी दुनियादारी ठीक है तभी आप 'नाम' जप सकते हैं। प्रभु के बिना कौन आपका रक्षक है?''

प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ।

सबसे ऊँचा प्रीतम गुरु है। जो गुरु चरणों में लग जाता है दुनिया में उसकी शोभा होती है; उसे देखकर दुनिया तर जाती है। क्या उसे भूलकर हम अपने ऊपर तरस नहीं कर रहे?

गुरु नानक जिन सुणया पेखया से गर्भास न पड़या रे ।

नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ।

सन्त-सतगुरु किसी पर अपना आप नहीं थोपते अगर ऐसा होता तो गुरु नानक या कबीर साहब ही काफी थे वे एक बार में ही सारे संसार को ले जाते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि काल ने एक बार सत्तर युग और एक बार चौंसठ युग कठिन तपस्या करके सतपुरुष की खुशी ली। सतपुरुष ने खुशी में काल को आत्माओं का भंडार सौंप दिया। काल ने सतपुरुष से वर लिए कि जीव को पिछले जन्म का ज्ञान न हो कि मैं जो सुख भोग रहा हूँ यह मेरे कौन से अच्छे कर्म का फल है और मैं जो दुख भोग रहा हूँ मेरे कौन से जन्म के पाप हैं। मैं जिसे जहाँ जन्म दूं चाहे मैं किसी को साँप, सूअर जो भी बनाऊं! चाहे मैं किसी को अच्छी बुद्धि दूं या न दूं वह उसी में खुश रहे। सन्त जब भी संसार में आएं कोई करामात न दिखाएं। सन्त जब भी जीव को लेकर जाएं 'नाम' की कमाई करवाकर ही ले जाएं। जब अवतार आते हैं तो खुली कला दिखाते हैं युगों तक लोग उसी तरफ लगे रहते हैं।

हम सब अपनी-अपनी योनियों में खुश हैं। साँप को मारें तो वह अपनी जान बचाने के लिए दौड़ता है। सूअर की योनि सबसे बुरी है वह भी अपनी जान बचाने के लिए चीं-चीं करता है? मुर्गे को मारते हैं तो वह च्यां-च्यां करते हैं, हर योनि अपनी योनि में खुश है।

एक बार महाराज सावन सिंह जी सतसंग देने के लिए कांगड़ा की पहाड़ी पर गए। वहाँ आपको एक भगवे कपड़ों वाला साधु बहुत प्यार से गले लगकर मिला। महाराज जी ने उससे कहा, "तू अभी तक यहीं फिर रहा है?" उसने कहा, "हाँ! मैं अभी फिर ही रहा हूँ।" बीबी लाजो ने महाराज सावन सिंह जी से पूछा, "आप इस साधु के साथ ऐसे मिले जैसे बहुत पहले से बिछड़े हुए मिलते हैं।" आपने कहा, "काको! यह

बहुत पुराना साधु है। इसमें इतनी ताकत है कि यह जिसके साथ आँखें मिलाएं उसे सीधा सच्चखंड लेकर जा सकता है। ऐसे साधु बहुत कम हैं, ये किसी की आँखों में नहीं झाँकते; गुप्त रहते हैं। हमें सतसंग करके जीवों से 'नाम' की कमाई करवाकर ले जाने का हुक्म है इसलिए ज्यादा लोग सतसंग में आकर हमसे फायदा उठाते हैं।''

हमारे पास बुजुर्ग बैठे हैं कल इन्होंने मुझसे कहा कि आप सुबह अंधेरे-अंधेरे ही **बारह-माहा** का पाठ कर दें तो अच्छा है। मैं थोड़ी देर तो चुप रहा इन्होंने आगे जाकर फिर मुझे घेर लिया कि आप अंधेरे-अंधेरे ही पाठ कर लें। फिर मैंने इन्हें सच्चे पातशाह सावन की कहानी बताई कि मुझे आपके चरणों में सेवा करने का नजारा मिला है चाहे! हाड़ी, सावणी कुछ भी हो आप सतसंग का प्रोग्राम नहीं छोड़ते थे। आपके बच्चे पल-पल पर भागकर जाते कि फलाना आदमी सतसंग में चला गया है आप सतसंग न करें। महाराज जी ने अपने बच्चों से कहा कि मैं तो तुम्हें भी कहता हूँ कि तुम भी कोई काम न करो सारे इधर ही लग जाओ।

मेरे पास बैठे हुओं की यह हालत है तो जब आप अपने गाँव में जाएंगे तो आपकी क्या हालत होगी? यह तो सावन-कृपाल की दया है कि मैं इनकी राय नहीं मानता।

वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ।

उन्हीं का मनुष्य जामा पवित्र है जो परमात्मा रूप हो चुके सन्तों से जाकर मिले। आखिर में गुरु साहब इस शब्द में कहते हैं कि हम आपसे विनती करते हैं कि आप लोग सतसंग में आएं 'नाम' जपें।

परमात्मा ने धुर-दरगाह से जिनके मस्तक में लिख दिया है वही लोग सतसंग के लिए समय निकाल सकते हैं। कई लोगों की तो यहाँ बैठे हुए ही माला फिरती रहती है कि यह काम है वह काम है।

P P P

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

सेवा

एक अनमोल संदेश – मुम्बई

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे सदा ही इस संसार में आए और 'शब्द-नाम' का उपदेश देकर अपने निज स्वरूप सच्चखंड में जाकर समा गए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जो उपजया सो बिनस है परयो आज के काल।
नानक हरि गुण गाए ले छाड़ सगल जंजाल।

यह संसार चला-चली का मेला है। हम किसी से पहले चले जाएंगे कोई हमारे बाद चला जाएगा। यहाँ कोई सदा नहीं रह सकता चाहे वह राजा है या रंक इसलिए दुनिया के मोह में न फँसे मालिक के साथ जुड़े मालिक की भक्ति करें। यह संसार एक स्वप्न की तरह है जो पैदा होता है वह मरता जरूर है।

राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कहो नानक थिर कुछ नहीं सुपने ज्यों संसार।

हम स्वप्न के साथ मन लगाकर स्वप्न को सच समझकर बैठ गए हैं। आज तक किसी की सारी आशाएं पूरी नहीं हुई अगर चार पूरी होती हैं तो दस अधूरी रह जाती हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सुपने सेति चित मूर्ख लाया आरजा गई बिहाए धंधा धाया।
पूर्ण भए ना काम मोह या माया क्या विचारा जंत जा तुध आप भुलाया।

आप परमात्मा को हाजिर नाजिर जानकर कहते हैं, ''इस जीव के बस में कुछ नहीं है। तूने जिसको समझ देनी है उसे समझ दे देता है जिसको भुलाना है उसे भुला देता है। तूने सब कुछ अपने हाथ में रखा हुआ है किसको मिलाना है और किसको नहीं?'' आप कहते हैं:

आपे संगत सद बहाले आपे विदा करावे।

तू आप ही इस दुनिया को सजाता है और आप ही विदा करता है। तू जिन पर दया करता है उन्हें साध-संगत में ले आता है।

सन्त-महात्मा हम दुनियावी जीवों के लिए संसार में आते हैं। वे दुनिया में आकर होका देते हैं कि हम दुनिया के प्यार और इन्द्रियों के भोग-विलास में फँसे हुए हैं। सन्त-महात्मा आजाद होते हैं, जन्म-मरण से परे होते हैं; वे हमारी पुकार सुनने के लिए आते हैं। वे हमें 'नामदान' देकर परमात्मा से मिलवाने के लिए आते हैं।

हमारे सतगुरु महाराज कहा करते थे, ''डॉक्टर जेलखाने में कैदियो की देख-रेख के लिए जाता है लेकिन वह आजाद होता है इसी तरह सन्त भी इस संसार में आजाद पुरुष होते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु 'नाम' देकर शिष्य को कभी नहीं भूलता। परमात्मा और गुरु दोनों ताकतें अभूल होती हैं। शिष्य भले ही गुरु को छोड़ जाए! गुरु उसे नहीं छोड़ता; गुरु को अपने बिरद की लाज होती है वह दयालु होता है।''

गुरु गोविंद सिंह जी का इतिहास पढ़ने से पता लगता है जिस समय गुरु साहब आनन्दपुर में थे उस समय अमृतसर के इलाके के कुछ शिष्यों ने कहा, ''हम जाना चाहते हैं।'' सन्त किसी को मजबूर नहीं करते। आपने कहा, ''बड़ी मुश्किल घड़ी है फिर भी जो लोग जाना चाहते हैं वे लिखकर रख जाएं कि हमें गुरु की जरूरत नहीं।''

जब ऐसा तूफान आता है तो बड़े-बड़े पेड़ गिर जाते हैं। उनमें से चालीस शिष्य ऐसे निकले जिन्होंने बेदावा लिखकर दे दिया कि तू हमारा गुरु नहीं हम तेरे शिष्य नहीं। गुरु साहब ने वह कागज अपनी जेब में रख लिया और उन्हें छुट्टी दे दी।

सारी आत्माओं में एक जैसी तड़प नहीं होती। वे जब अपने घर पहुँचे तो उनकी माताओं और पत्नियों ने कहा कि तुम लोग गुरु को बेदावा लिखकर दे आए हो तुम्हारा मुँह देखने के लायक नहीं। हम

तुम्हारे लिए खाना तैयार नहीं करेंगी। तुम लोग घर में रहकर चूल्हे-चौंके का काम करो हम लोग गुरु के पास जाती हैं।

तब तक गुरु गोविंद सिंह जी आनन्दपुर छोड़कर मालवा की धरती मुक्तसर साहब आ गए थे। उन शिष्यों ने शर्म महसूस की और वापिस आ गए अब उनके लिए गुरु का सामना करना मुश्किल हो गया कि बहुत बड़ी गलती हो गई है पता नहीं गुरु साहब माफी देंगे या नहीं! जब हम सच्चे दिल से माफी माँगते हैं तो सन्त यह भी नहीं पूछते कि तुमने क्या कसूर किया है? हम माफी माँगते हुए भी छल-कपट करते हैं। वे शिष्य जब गुरु साहब के पास आए तो पीछे हटकर बैठ गए।

उन शिष्यों का मुगलों की फौज से सामना हुआ और वे सारे ही शहीद हो गए। जिस जगह जंग हुई थी गुरु गाविंद सिंह जी वहाँ पता करने के लिए आए कि इस जंग में मुकाबला किसने किया? उन्होंने देखा कि वहाँ पर माता भागो और भाई महासिंह ही जीवित बचे थे। गुरु साहब ने महासिंह से कहा, ''मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। दुनिया की जो धन-दौलत माँगना चाहते हो माँग लो! इस समय गुरु नानक का दरबार खुला हुआ है।'' महासिंह ने कहा, ''हमें दुनिया का कोई सामान नहीं चाहिए बस! हम जो बेदावा लिखकर दे आए थे आप उसे फाड़ दें।''

गुरु साहब ने कहा, ''मैं आनन्दपुर में सब कुछ छोड़ आया हूँ लेकिन इस कागज को जरूरी समझकर यह कागज मैंने अपने पास रखा हुआ है। तुम देख सकते हो इसमें तुम लोगों ने लिखा है कि तू हमारा गुरु नहीं हम तेरे शिष्य नहीं लेकिन मैंने तो कहीं नहीं लिखा कि मैं तुम्हारा गुरु नहीं या मैं तुम्हारी संभाल नहीं करूंगा।'' सन्त-सतगुरु नाम देकर आत्मा को नहीं भूलते।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल सिंह जी ने जिन्हें 'नाम' देना था नाम दे गए और जिन्हें सतसंग का प्यार देना था प्यार दे गए। आप पाँच तत्त्वों का भौतिक शरीर छोड़कर अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करके चले गए। हम लोग मंदबुद्धि वाले होते है समझते नहीं। सबने अपनी-

अपनी जगह शोर मचाया सच्चाई का ढोल पीटा कि वह मर गए हैं। पार्टियाँ बन गई और भी बहुत कुछ हुआ।

यह गरीब जो आपके सामने बैठा है इसे तो पूरा गंगानगर जिला भी नहीं जानता था तो दिल्ली या मुंबई में किसने जानना था? मैं तो जमीन के अंदर बैठकर अपना तप-अभ्यास कर रहा था। यह तो वही ताकत जानती है जिसने संसार में जानकारी दी; मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता। यहाँ मुंबई में भी कोई आदमी यह नहीं कह सकता कि हमने इनका नाम सुना था या हम इन्हें जानते थे।

मैंने बाहर जाकर भी यही कहा कि जो लोग यह कहते हैं कि गुरु मर गया है उन्हें अदालत में लाकर पूछा जाए कि आप लोगों ने मरने वाला गुरु क्यों धारण किया? जिनका गुरु ही जन्म-मरण में लगा हुआ है उसके शिष्य कैसे तर जाएंगे? यह बहुत सोचने-समझने की बात है जिन महात्माओं ने तर्जुबा किया है वे कहते हैं कि पूर्ण सन्त जन्म-मरण में नहीं आते। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु करया है देह का सतगुरु चीन्हां नाहे।
लख चौरासी धार में फिर फिर गोता खाहे।

हम सन्तों की देह को पकड़ लेते हैं। सन्तों की देह में जो 'शब्द' काम करता है हम उसे प्रकट नहीं करते। जब देह आँखों से दूर हो जाती है तो हमारे अंदर गड़बड़ पैदा हो जाती है; अब भ्रम कैसे निकलेगा! गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु मेरा सदा सदा न आए न जाए।
ओह अविनाशी पुरुष है हर जेहा रहा समाए।

वह सतयुग, त्रेता, द्वापर और आज कलयुग में भी है आगे भी सदा उसी ताकत ने रहना है। वह 'शब्द' शरीर धारण करके इस संसार में आता है।

महाराज सावन सिंह जी की कृपा से मेरा मिलाप बाबा सोमनाथ से हुआ। विदेशो में बाबा सोमनाथ के बारह शिष्य थे, जिनमें से आधे

तो सन्तमत भूलकर अपना अभ्यास छोड़ गए थे और बाकी के पाँच-छह शिष्य मुझे सन्तबानी आश्रम अमेरिका में मिले। मैंने उनसे कहा कि आपका स्वागत है आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। उन्होंने मुझसे डरते-डरते बातचीत की अगर हम अपने और भाईयों को आपके बारे में जानकारी दे दें तो अच्छा होगा। मैंने कहा जिसकी मर्जी हो वह आ सकता है सतसंग सबके लिए खुला है।

मैं महाराज कृपाल का शिष्य था। महाराज कृपाल ने सभी समाजों के लोगों को इकट्ठा करके एक ही प्लेटफार्म पर बिठा दिया था। बचपन से ही मेरा दिल बहुत खुला था। मेरे अंदर कभी यह भावना नहीं आई थी कि हिन्दु, सिक्ख, मुसलमान या इसाई किसी और परमात्मा ने बनाए हैं। मुझे बचपन से ही ज्ञान था कि परमात्मा सबके अंदर है लेकिन परमात्मा से मिलने का यत्न हम अपनी मन-बुद्धि से करते थे इसलिए कामयाब नहीं होते।

मालिक की ऐसी मौज हुई विदेशी प्रेमियों की वजह से मुंबई के कुछ प्रेमी दामू, मोहन मेरे पास राजस्थान आए। इन्होंने बहुत प्रेम दिखाया। मैंने इनसे कहा कि मैं मुंबई आऊंगा। मैं जब यहाँ आया तो मुझे थोड़े से लोग मिले। मैंने इन्हें बताया, ‘‘सन्त-सतगुरु कभी अपने शिष्यों को नहीं भूलते। जिस तरह मेरे सतगुरु ने मुझे जमीन के अंदर से उठाकर अपनी आत्माओं की प्यास बुझाई; आज कितने ही लोगों को फायदा पहुँच रहा है। आपके गुरुदेव आपको कैसे भूल सकते हैं?’’

यह फुलवाड़ी महाराज सावन सिंह जी की है। आज हम महाराज सावन सिंह, महाराज कृपाल सिंह और बाबा सोमनाथ जी की दया से ही इकट्ठे होकर उनकी याद मना रहे हैं अगर वे दया न करते तो हम इकट्ठे हो ही नहीं सकते थे।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ‘‘हजार साधु एक मकान में रह सकते हैं लेकिन दो सांड एक गाँव में नहीं रह सकते।’’

सब सन्त अंदर सहेलियों की तरह होते हैं उनका आपस में प्यार होता है। वे वहाँ से सबकी संभाल करते हैं लेकिन हमारी आँखें बंद हैं इसलिए हम समझते नहीं। भाग्यशाली लोग अपने गुरु की तारीफ और उसका संदेश सुनकर खुश होते हैं लेकिन भाग्यहीन लोग अपने गुरु की तारीफ सुनकर भी खुश नहीं होते।

मैं बचपन से ही बाबा सावन सिंह जी का जन्मदिन मनाया करता था। पंजाब में मेरे पिछले गाँव का वाक्या है कि वहाँ एक परिवार के लोग महाराज सावन सिंह जी के नामलेवा थे। वे मेरे खेत में आते और बहुत कुछ ले जाया करते थे लेकिन जिस दिन हम महाराज सावन सिंह जी का भंडारा मनाते वे उस दिन हाजिर नहीं होते थे। वे लोग कहते, ''इसे तो महाराज सावन सिंह जी से 'नाम' ही नहीं मिला यह कैसे भंडारा मनाने का हकदार है?'' मैंने कभी उनकी परवाह नहीं की थी। महाराज जी की दया से उस जमाने में काफी खर्चा भी होता था बहुत लोग फायदा उठाते थे। सन्त सबके साँझे होते हैं वे मालिक के प्यारे होते हैं। वे प्यार करने के लिए आते हैं और प्यार ही सिखाते हैं अगर आपको अपने गुरु से प्यार है तो क्या आप मुफ्त में फायदा भी नहीं उठा सकते लेकिन जीव भाग्य कहाँ से लाएं?

गुरु सिक्खां दे मन भांवदी गुरु सतगुरु की बडयाई।

सतगुरु की तारीफ गुरुमुखों के दिल को ही अच्छी लगती है। हमारे सतगुरु महाराज कृपाल बताया करते थे कि लैला-मजनूं का आपस में प्यार था। एक आदमी ऊँट पर जा रहा था उसने लैला के बारे में बात करनी शुरू की तो मजनूं बारह मील तक ऊँट के साथ-साथ भागता रहा। जैसे ही लैला की कहानी खत्म हुई वह वापिस आ गया। मजनूं ने दुनियावी प्यार के लिए बारह मील का सफर तय किया तो रूहानी प्यार की क्या कीमत हो सकती है?

हम जहाँ पर गुरु की याद मनाते हैं अगर वहाँ भी हमारा मन न टिके तो क्या हम गुरु के साथ प्यार करते हैं? किसी ने संसार में सदा

नहीं रहना। हमें इंसानी जामा मिला है। आप इस जामें में सतसंग करें। इंसानी जामा बहुत कीमती है अगर एक बार यह जामा हाथ से निकल गया तो फिर हाथ नहीं आएगा। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

करो री कोई सतसंग आज बनाए।

पंजाब में मेरे गाँव के पास ही एक भुज्जो गाँव है। वहाँ एक भाई आदम हुआ है। उसका कोई लड़का नहीं था। वह अपने स्वार्थ के कारण भक्ति करने लगा। उसने बहुत से देवी-देवताओं की पूजा की और दान-पुण्य भी किया। आखिर उसका मिलाप गुरु रामदास जी के एक शिष्य के साथ हुआ। उस शिष्य ने भाई आदम को समझाया कि तूने गुरु से केवल 'नाम' ही माँगना है क्योंकि 'नाम' भक्ति का दान है। तू क्यों इन चक्करों में पड़ा हुआ है? अगर तेरा किसी से लेन-देन हुआ तो वह खुद ही तेरे घर आ जाएगा। हम लोग दुनियावी चीजों में फँसे होते हैं उसने सोचा! यह सब ऐसे ही कहता है पुत्र तो अनमोल होते हैं। आखिर वह गुरु रामदास जी के पास चला गया।

उस समय गुरु रामदास जी गोइंदवाल में थे। भाई आदम ने गुरु रामदास जी से कहा, ''कोई **सेवा** बताएं?'' गुरु साहब ने कहा, ''भाई! तू लंगर की सेवा किया कर, आग जलाने के लिए लकड़ियों की कमी है तू लकड़ियां लेकर आया कर।'' उन दिनों नहरें नहीं थी गाँव में लकड़ी की बहुत दिक्कत थी बिजली और गैस के साधन भी नहीं थे।

भाई आदम रोजाना लंगर के लिए लकड़ियां लाता जिससे लंगर बनाने वालों को बहुत फायदा हुआ। वह रोजाना दो गट्ठर लकड़ियों के लाता जिसमें से एक गट्ठर लंगर में दे देता और दूसरा संभालकर रख लेता कि कभी बारिश हो जाए तो ये लकड़ियां लंगर में काम आ जाएंगी! एक दिन सर्दी के मौसम में बारिश हुई, सर्दी बहुत बढ़ गई। उस समय बिल्डिंगे नहीं होती थी लोगों को बहुत मुसीबत सहनी पड़ती थी। गुरु साहब बाहर निकले तो संगत को सर्दी में बैठा हुआ देखकर उन्हें बहुत दर्द हुआ। गुरु को संगत अपनी जान से भी प्यारी होती है। गुरु साहब

ने कहा, ''कोई ऐसा आदमी है जो इस समय संगत को गर्मी पहुँचाए, आग सिकवाए? गुरु नानकदेव जी उसकी मुराद पूरी करेंगे।''

मैंने महाराज सावन सिंह जी का समय देखा है उस समय भी बड़ी-बड़ी बिल्डिंगे नहीं होती थी। लोग सर्दी में आसमान की छत के नीचे ही प्यार भरे शब्द बोलते हुए सारी रात काट लेते थे तो गुरु रामदास जी के समय में बिल्डिंगे कहाँ होनी थी?

भाई आदम ने बहुत लकड़ियाँ इकट्ठी की हुई थी उसने कई जगह अंगीठियां लगा दी। जब गुरु रामदास जी ने आग जलती हुई देखी तो प्रेमियों ने उन्हें बताया कि इस आग का इंतजाम भाई आदम ने किया है। गुरु साहब ने उसे अपने पास बुलाकर कहा, ''प्यारेया! मैं तेरी सेवा से बहुत खुश हूँ। तू माँग क्या माँगता है?'' वह सतसंग सुन चुका था, 'नाम' का अभ्यास कर चुका था उसे सच्चाई का ज्ञान हो चुका था।

बिन तुध होर जे मंगणा सिर दुखां दे दुख।
देह नाम संतोखिया उतरे मन की भुख।

भाई आदम ने कहा कि हमें तो माँगना भी नहीं आता कि क्या माँगे? मैं आपसे 'नाम' माँगता हूँ। गुरु रामदास जी ने कहा, ''तू घर से तो लड़के की इच्छा लेकर यहाँ आया था लेकिन अफसोस! तेरे कर्मों में तो सात जन्मों तक कोई लड़का पैदा नहीं हो सकता। गुरु नानकदेव जी को यही मंजूर है कि हमारे घर चार लड़के पैदा होने थे उनमें से तीन लड़के-पृथ्वीचन्द, महादेव और अर्जुनदेव पैदा हो चुके हैं; चौथा तेरे घर पैदा होगा। तू उसका नाम भगतू रख लेना वह बहुत भक्ति करेगा।''

भाई आदम के घर लड़का पैदा हुआ, उसने बहुत भक्ति की। गुरु साहब ने उसे प्यार से भाई भगतू कहा। भाई का खिताब बहुत इज्जत वाला शब्द होता है। वह ऋद्धियों-सिद्धियों से काम लेता था। उसने बहुत सी भटकी हुई आत्माओं को कैद कर लिया था वह उन्हें खाने के लिए चने दिया करता था।

एक दिन गुरु रामदास जी महाराज भाई भगतू से मिलने आए तब भटकी हुई आत्माओं ने गुरु साहब के आगे रोकर कहा कि आज हमें आपके दर्शन हुए हैं हम बहुत दुखी हैं आप हमारी जान छुड़वाएं। गुरु रामदास जी ने भाई भगतू से कहा, ''सतसंगी को ऐसी बातें शोभा नहीं देती। तू यहीं रह जाएगा तरक्की नहीं कर सकेगा इन आत्माओं को आजाद कर दे।''

भाई भगतू ने कहा कि मैं इन्हें आजाद तो कर दूं लेकिन लोग कहेंगे कि शायद! भाई भगतू के पास कुछ नहीं था इसने ऐसे ही पाखंड रचा हुआ था। मैंने आज इनसे एक यादगार जरूर बनवानी है। भाई भगतू ने शाम के समय गाँव में ढ़िढोरा पिटवा दिया कि कोई आदमी घर से बाहर न निकले, चाटी के अंदर मधानी न डालें और चूल्हे में आग न जलाएं। उसने रात को भटकी हुई आत्माओं से बहुत बड़ा कुँआ खुदवाया जो आज भी देखा जा सकता है। सुबह एक औरत ने चाटी मे मधानी डाली। तब तक सारा कुआँ बन चुका था लेकिन उसके ऊपर रस्सी खींचने वाला विड रह गया था जो नहीं बन सका उसे बाद में गाँव वालों ने बनवाया।

उस कुएं का नाम भूतों वाला कुआँ है। गाँव का नाम उसी के नाम पर भाई भगता गाँव है। सिक्ख इतिहास में यह बहुत मशहूर बात है।

भाई आदम घर से तो लड़के की आशा लेकर चला था। उसने **सेवा** की 'नाम' लिया नाम की कमाई की। बच्चे का ख्याल दिल से भूल गया। उसकी किस्मत में लड़का नहीं था लेकिन गुरु साहब ने उसे अपना आप भी दे दिया।

यह छोटी सी **सेवा** का एक उदाहरण है कि किस तरह सन्त-सतगुरु हमारी संभाल करते हैं। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उनके बताए हुए उपदेश का अच्छी तरह अध्ययन करें और ज्यादा से ज्यादा पवित्र होकर 'शब्द-नाम' की कमाई करें।

P P P

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम–विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

हकीकी ईश्क के लिए मिजाजी ईश्क सीढ़ी की तरह है, यह केवल तवज्जों को एकाग्र करने के लिए ही होता है। जब एकाग्रता हो जाए तो जल्दी आगे बढ़ें क्योंकि यह मार्ग कठिन और खतरनाक है जो इस मुकाम पर हार जाते हैं वे जिस्मानी ईश्क में फँस जाते हैं।

मौलाना जामी साहब फरमाते हैं, ''मिजाजी ईश्क पुल की तरह होता है पुल केवल पार करने के लिए होता है। पुल पर अटकने वाले लटक जाते हैं, उन्हें हकीकी प्रीतम का मिलाप नसीब नहीं होता।''

सन्त बर्नाड जी कहते हैं कि **प्रेम** पहले जिस्म से शुरू होता है फिर आत्मा में घुलमिल जाता है इसलिए जाहरी ईश्क को हकीकी ईश्क की सीढ़ी समझना चाहिए अगर इनमें खुदगर्जी न हो तो ये दोनों **प्रेम** अच्छे हैं; मौहब्बत केवल मौहब्बत की खातिर हो। सच्चा प्रेम वही होता है जिसकी तह में कोई गर्ज या ख्वाहिश न हो। मालिक की मौहब्बत की तरह हमारी मौहब्बत भी बेगरज होनी चाहिए। जिस मौहब्बत में कोई गरज छिपी हो उसे मोह कहते हैं।

जब **प्रेम** खास हदों में कैद होता है तब तंगदिली का कारण बनकर दुख का कारण बन जाता है इसी कारण मजहबों मुल्कों और कौमों के लड़ाई-झगड़े होते हैं। यह बेसमझ और खुदगर्ज प्रचारकों की मेहरबानी का नतीजा होते हैं। उनका प्रचार मालिक और मालिक की खलकत हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सबके लिए होना चाहिए।

मजनूं की जनून भरी हालत पर नजर मारें! वह लैला के पीछे पागलों की तरह मारा-मारा फिरता था अगर कहीं लैला के कदमों के निशान देख लेता तो वहाँ से सजदा किए बगैर गुजरना भी भारी गुनाह

समझता था। एक बार उसे कुत्ते के पैरों को चूमते हुए देखा गया। पूछने पर मजनूं ने बताया कि वह उस कुत्ते के पैर इसलिए चूमता है कि उस कुत्ते का फेरा कभी-कभी लैला की मुबारक गली में पड़ जाता है। इस ख्याल का जिक्र भाई गुरदास जी ने इस तरह किया हैः

लैला की दरगाह का कुत्ता मजनूं देख लुभाणां।

मजनूं के दिल में लैला के ईश्क के सिवाय और कोई हस्ती समाई हुई नहीं थी। एक बार किसी ने खिलाफत के बारे में मजनूं के आगे जिक्र किया तो मजनूं ने उसके जवाब में कहा, ''मेरे ख्याल से हजरत ईमाम हसन या किसी और को खिलाफत का हकदार समझने की बजाय बेहतर है कि खिलाफत लैला को दी जाए।'' मजनूं लैला के मिजाजी ईश्क में फँस गया। जो ईश्क हमेशा न रहे वह ईश्क जवानी की कामचेष्टा का एक बच्चों वाला खेल है।

मिजाजी ईश्क मालिक से दूर रखता है। जब लैला मर गई तो मजनूं की आँख खुली। मजनूं ने कहा, ''यह सारा मामला ही शर्मिन्दगी का है। मैं मरने वाली चीज को दोस्त क्यों बनाऊं? वही यार अच्छा है जो सदा साथ रहे; तू ऐसे के साथ दिल लगा जो कभी फनाह न हो।''

सभी महात्माओं ने मिजाजी ईश्क के खतरों से बचने के लिए यह हिदायत फरमाई है कि मिजाजी ईश्क दुनिया के लोगों की बजाय अपने पीर-मुर्शिद के साथ करें क्योंकि मुर्शिद दुनिया की मैलों से रहित है। मुर्शिद की मौहब्बत दुनिया में नहीं फँसाएगी बल्कि उसके अतीत होने का खमीर बख्शेगी और रब अवश्य याद आएगा। असर, कर्म और सिफत की मौहब्बतें मिजाजी हैं; ये तीनों हालतें मुर्दा हैं और ग्रहण करने के योग्य नहीं।

शम्स तबरेज साहब फरमाते हैं, ''तू कब तक मुर्दा माशूक को बगल में लेकर फिरेगा? तू उसकी जान को बुक्कल में ले। सच्चा **प्रेम** और प्रेमी अनन्तकाल तक रहेंगे। तू दिल को जिस्म पर मत रख क्योंकि वह तो माँगी हुई चीज को छोड़कर और कुछ नहीं। मुर्दे के साथ दिल

लगाना अपने आपको मुर्दा बनाना है। जिस्मानी ईश्क इंसान को गुमराह करके हकीकत से दूर कर देता है और फनाह के दायरे से बाहर नहीं निकलने देता। मिजाजी ईश्क बच्चे, स्त्री, दौलत, हुकूमत और संसार की मान-बड़ाई सब फनाह है। हमें इनकी तरफ से मुँह मोड़कर मालिक और सतगुरु के साथ ईश्क अख्तियार करना चाहिए।

हदीश में रसूल करीम साहब फरमाते हैं कि मालिक के ईश्क में मरना शहादत प्राप्त करना है। जो ईश्क में मर गया वह शहादत की मौत मरा। यह दुनिया हमेशा के रहने की जगह नहीं। इंसान अशरफुल मखलूकात सृष्टि का सरदार है। मिजाजी ईश्क मे सब्र नहीं पर हकीकी ईश्क में सब्र की कोई हद नहीं रहती।

हाफिज साहब फरमाते हैं कि किसी का आशिक होना किस काम का? अगर प्रीतम ने उसकी तरफ नजर ही नहीं की! लोगों को ईश्क का सबक परवाने से सीखना चाहिए क्योंकि वह अपने आपको जला लेता है सीं नहीं करता। तू सब्र रख क्योंकि आशिकी के रास्ते पर जब तक किसी ने जान नहीं दी तब तक वह प्रीतम तक नहीं पहुँच सका।

मिजाजी और हकीकी ईश्क को पैदा करने के तरीके

जब हमें किसी के साथ मौहब्बत पैदा करने की जरूरत हो तो हमें इस बात की पड़ताल करनी चाहिए कि उसे किस किस्म की मौहब्बत पसंद है। हमें अपने अंदर उस तरह के गुण बढ़ाने चाहिए जिन्हें सुनकर उसके अंदर शौक पैदा हो। मौहब्बत सिर्फ देखने से ही पैदा नहीं होती। बहुत बार उसकी में प्रशंसा सुनने और बातें करने से भी पैदा हो जाती है। जब आप अपने अंदर ऐसे गुण पैदा कर लेंगे तो वह देखेगा या उसके बारे में सुनेगा तो वह आपको बेख्तियार चाहने वाला बन जाएगा।

अगर उसे नक्श निगारी का शौक है तो आप नक्श निगारी में कमाल हासिल करें। वह जब उस हुनर के कमाल के बारे में सुनेगा या उसे देखेगा तो आप उसके प्रेम के पात्र बन जाएंगे। अगर उसे अच्छे कंठ, सुरताल या गाने की आवाज सुनने का शौक है या वह शायरी को

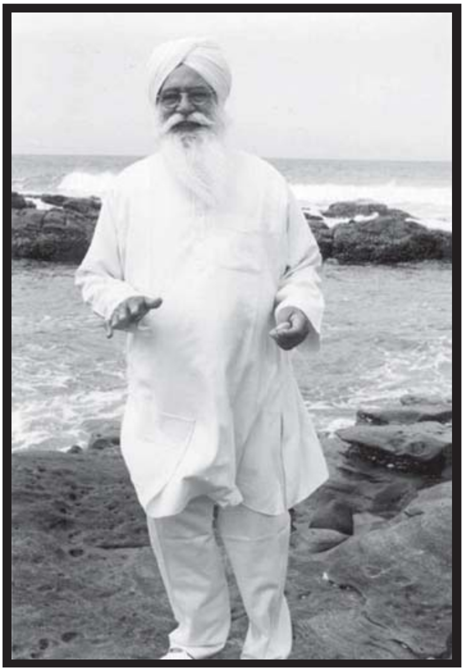

पसंद करता है तो आप सुर और आवाज को ठीक करें, गाने में कमाल हासिल करें, कविता सीखें। जब वह सुरीली कविता सुनेगा तो मोहित हो जाएगा। ऐसे हालात रोज-रोज सुनने या देखने में आते रहते हैं। आप अपने अंदर इस तरह का कमाल पैदा करें तो आप एक दिन प्रीतम की मौहब्बत के हकदार बन जाएंगे। यह मिजाजी ईश्क पैदा होने का सामान है।

अगर किसी के साथ मौहब्बत विषय-भोग का रस लेने के लिए है तो वह बंधन का कारण है और घृणा योग्य है। इंसान अपनी तवज्जो की खूबसूरती देकर उसके हुस्न को दुगना कर देता है, खुद ही उसमें फँस जाता है और उसकी नजर हकीकत की तरफ नहीं जा सकती। ऐसी मौहब्बत में अगर इन्द्रियों के भोगों की मैल न हो, कोई गर्ज न छुपी हो तो उससे सच्ची सुच्ची हकीकी मौहब्बत पैदा हो जाती है।

इस बारे में मौलवी जामी साहब फरमाते हैं अगर ऐसा मिजाजी ईश्क है तो भी गनीमत समझें क्योंकि यह हकीकी ईश्क के पैदा करने का सामान है। मुसलमान सूफी फकीरों ने मिजाजी **प्रेम** को हकीकी प्रेम की पहली सीढ़ी माना है। किसी दिल को प्रेम के बिना नहीं रहना चाहिए क्योंकि मिजाजी ईश्क के शीशे में हकीकी ईश्क का चेहरा नजर आता है। इस ईश्क की रोशनी उस ईश्क की गली में प्रकाश करती है। चाहे मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर है, सब जगह ईश्क का ही मुकाम है। इंसान चाहे होश में है या बेहोश हैं सब प्रीतम की तलाश में हैं।

शेष अगले अंक में.......

धन्य अजायब

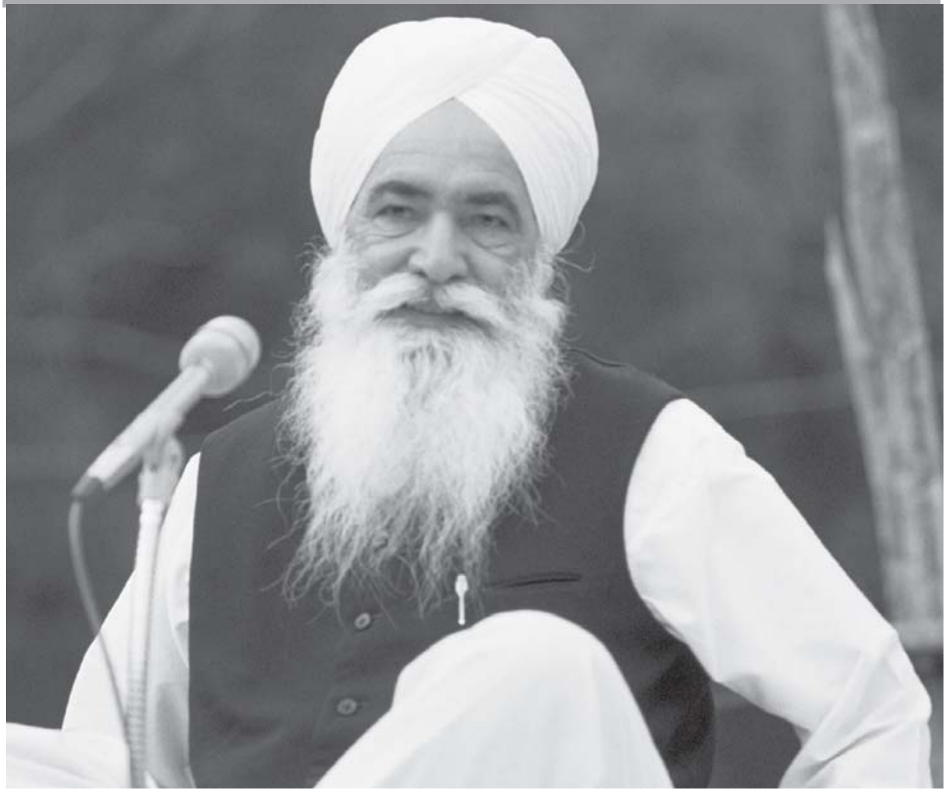

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी अहमदाबाद में 7, 8 व 9 अगस्त 2009 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी भाई-बहनों के चरणों में नम्र निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाना विद्यार्थी भवन,
फुटबाल ग्राऊंड के सामने, कांकरिया
अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे: शैलेष शाह 9327 011 142